

संस्करण 2025



PYQ+

सामान्य अध्ययन

3400+

PYQs

UPSC के प्रश्नों की प्रकृति का
आकलन तथा उनके अनुरूप आपकी
क्षमता के विकास में सहायक

प्रमुख विशेषताएँ:

- » प्रश्नों का वर्षवार एवं विषयवार विभाजन
- » संक्षिप्त एवं सटीक व्याख्या
- » PWOnlyIAS विशेष



UPSC द्वारा आयोजित सिविल सेवा एवं अन्य परीक्षाओं हेतु उपयोगी

विषय सूची

1. प्राचीन इतिहास	1
2. मध्यकालीन इतिहास	27
3. कला एवं संस्कृति	47
4. आधुनिक भारत	62
5. राजव्यवस्था	120
6. अर्थव्यवस्था	191
7. भूगोल	287
8. पर्यावरण	408
9. विज्ञान एवं पौधोगिकी	453
10. अंतर्राष्ट्रीय संबंध, समसामयिक घटनाक्रम और विविध	617

प्राचीन इतिहास

1. प्राचीन इतिहास का निर्माण

1. दक्कन की जोरें संस्कृति के संबंध में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: [CDS परीक्षा (I), 2024]

- इसमें, वास्तव में, तटीय कोंकण जिले को छोड़कर संपूर्ण आधुनिक महाराष्ट्र शामिल है।
- ऐसा प्रतीत होता है कि प्रवरा-गोदावरी घाटियाँ केन्द्रीय क्षेत्र रही हैं।
- इस संस्कृति के बड़े स्थलों से झूमकृषि के प्रमाण मिलते हैं।

उत्तर: (b) जोरें संस्कृति (लगभग 1400-700 ईसा पूर्व) दक्कन की सबसे प्रमुख ताप्रापाषाण संस्कृति थी।

कथन 1 और 2 सही हैं: जोरें संस्कृति तटीय कोंकण और विदर्भ क्षेत्रों को छोड़कर लगभग पूरे आधुनिक महाराष्ट्र (नासिक, पुणे, धुले, जलगांव, मराठवाड़ा) में विस्तृत थी। जोरें (अहमदनगर) के नाम पर इस संस्कृति को जोरें संस्कृति कहा जाता है, इसके प्रमुख स्थलों में इनामांवं, दैमावाद, नेवासा शामिल हैं, और प्रवरा-गोदावरी घाटियाँ (विशेषक दैमावाद) इस संस्कृति का केन्द्रीय क्षेत्र रही होगी।

कथन 3 सही नहीं है: इनामांवं से प्राप्त साक्ष्य शुरू, स्थायी कृषि को दर्शाते हैं जिसमें सिंचाई नालिकाएँ, अन्न भंडार और जौ, गेहूँ, ज्वार, चावल, दालें जैसी फसलें प्रमुख थी। झूमकृषि का कोई प्रमाण नहीं मिला है।

PW Only IAS विशेष

भारत में विभिन्न ताप्रापाषाण संस्कृतियाँ- अहाड़-बनास संस्कृति (राजस्थान), कायथा संस्कृति (मध्य प्रदेश), मालवा संस्कृति (मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र), गेरल रंग के मृदभांड (OCP) संस्कृति (गंगा का मैदान), सावल्दा संस्कृति (महाराष्ट्र)।

2. ‘शिल्प उत्पादन केंद्र’ के रूप में किसी पुरातात्त्विक स्थल को चिह्नित करने हेतु पुरातत्त्वविदों के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा/कौन-से महत्वपूर्ण चिह्नक (मार्कर) है/हैं? [CAPF परीक्षा, 2023]

- कच्चे माल का प्रमाण, जैसे प्रस्तर पिंड, पूरे शंख, आदि
- स्थल का भौगोलिक विस्तार
- अपूर्ण वस्तुएँ, त्याग दिया गया माल तथा कूड़ा-करकट का प्रमाण
- विविध प्रकार के मृदभांड का प्रमाण

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- | | |
|-----------------|-----------------|
| (a) केवल 1 | (b) केवल 1 और 3 |
| (c) केवल 2 और 4 | (d) केवल 3 |

उत्तर: (b) शिल्प उत्पादन के केंद्र की पहचान करने के लिए, पुरातत्त्वविद् विशिष्ट साक्ष्य की तलाश करते हैं।

❖ कथन 1 और 3 सही हैं:

❖ **कच्चे माल:** पत्थर की गांठें, तांबे के अयस्क और अन्य कच्चे माल की उपस्थिति से संकेत मिलता है कि इन सामग्रियों के प्रसंस्करण द्वारा अतिम उत्पाद के निर्माण के लिए इन्हें इस स्थल पर लाया गया होगा।

❖ **अपूर्ण वस्तुएँ, अस्वीकृत वस्तुएँ, और अपशिष्ट:** अपूर्ण वस्तुएँ, अस्वीकृत या त्याग दिया माल और कूड़ा-करकट जैसे शैल टुकड़े, धातुमल या मिट्टी के बर्तनों के टुकड़े के साक्ष्य, स्थल पर सक्रिय विनिर्माण और प्रसंस्करण को दर्शाते हैं।

कथन 2 और 4 सही नहीं हैं:

❖ **भौगोलिक विस्तार:** स्थल का आकार आवश्यक रूप से शिल्प उत्पादन से संबंधित नहीं होता है। बड़ी विस्तारों ने केवल विशिष्ट उत्पादन में, बल्कि विविध गतिविधियों में भी संलग्न हो सकती हैं।

❖ **मृदभांड की विविधता:** मृदभांडों की विविधता सांस्कृतिक या व्यापारिक पहलुओं का संकेत दे सकती है, लेकिन यह भट्टियों या मिट्टी के बर्तनों के कचरे जैसे विशिष्ट चिह्नों के बिना उत्पादन केंद्र की पुष्टि नहीं करती है।

3. ‘नवपाषाण काल’ के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है? [CAPF परीक्षा, 2023]

- इस काल की अभिलाक्षणिक विशेषताओं में यिसे हुए और पॉलिश किए हुए पाषाण के औजार, कृषि, पशुओं को पालतू बनाना और मृदभांड शामिल हैं।
- इस काल को ‘नव प्रस्तर युग’ भी कहते हैं।
- ये अभिलाक्षणिक विशेषताएँ उप-महाद्वीप के विभिन्न भागों में लगभग एक ही समय में दिखाई देती हैं।
- कृषि का सबसे पहला साक्ष्य लगभग 8000 BCE में मेहरगढ़ से प्राप्त होता है।

उत्तर: (c) नवपाषाण काल, पुरापाषाण काल के औजारों से पॉलिश किए हुए पत्थर के औजारों और कुल्हाड़ियों (सेल्स) की ओर परिवर्तन का प्रतीक है, जिसे कृषि, पशुपालन और मृद्भांड के प्रचलन से चिह्नित किया जाता है। भारत में इसकी विशेषताएँ विभिन्न क्षेत्रों में अलग अलग हैं।

विकल्प (c) सही है: भारतीय उपमहाद्वीप में नवपाषाण काल की अभिलाक्षणिक विशेषताएँ विभिन्न भागों में अलग-अलग समय में दृष्टिगत होती हैं।

❖ मेहरगढ़ (पाकिस्तान) में प्रारंभिक नवपाषाण काल के चिन्ह दिखाई देते हैं, जहाँ लगभग 7000-5500 ईसा पूर्व से कृषि, पूर्व मृदभांड चरण के साक्ष्य मिलते हैं।

❖ किली गुल मुहम्मद (क्वेटा घाटी) से लगभग 5500-4500 ईसा पूर्व नवपाषाण काल चरण की उपस्थिति की जानकारी मिलती है।

❖ गुफकराल (कश्मीर) में लगभग 3000 ईसा पूर्व में गर्त आवासों के साथ मानव बस्तियाँ बसाई जाने लगी थीं।

❖ मेहरगढ़ (लगभग 8000 ईसा पूर्व) से प्राप्त प्राचीनतम कृषि साक्ष्य में गेहूँ, जौ और पालतू पशु शामिल हैं।

विकल्प (a), (b), (d) सही नहीं हैं: नवपाषाण काल की अभिलाक्षणिक विशेषताओं में औजार, कृषि, पशुपालन और मृदभांड शामिल हैं। मेहरगढ़ (लगभग 8000 ईसा पूर्व) से गेहूँ और जौ के सबसे पुराने साक्ष्य मिलते हैं। इस काल को ‘नव प्रस्तर युग’ भी कहते हैं।

4. विक्रमखोल गुफा कहाँ स्थित है? [CDS (II) परीक्षा, 2023]

- (a) ओडिशा (b) बिहार
(c) तेलंगाना (d) पश्चिम बंगाल

उत्तर: (a) विक्रमखोल गुफा (जिसे विक्रमखोल भी कहा जाता है) ओडिशा के झारसुगुड़ा जिले के बेलपहाड़ से लगभग 12 किलोमीटर दूर, बेलपहाड़ संरक्षित वन में स्थित एक प्रागैतिहासिक शैलाश्रय है। इस गुफा में लाल गेंहु से बनी लगभग 3000-1500 ईसा पूर्व की शैल कलाकृतियाँ और उकेरे गए चित्रात्मक शिलालेख हैं।

विकल्प (b), (c) और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ **बिहार:** बराबर गुफाओं (तीमरी शताब्दी ईसा पूर्व) के लिए जाना जाता है, विक्रमखोल से कोई संबंध नहीं।
- ❖ **तेलंगाना:** भौंगि, कुरनूल जैसे प्रागैतिहासिक स्थलों के लिए जाना जाता है, विक्रमखोल से कोई संबंध नहीं।
- ❖ **पश्चिम बंगाल:** चंद्रकेतुगढ़ जैसे स्थल, लेकिन शिलालेखों वाली कोई प्रागैतिहासिक गुफा नहीं।

5. ‘लेवलोइस तकनीक’ के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: [CDS (II) परीक्षा, 2023]

1. इसका संबंध छिद्रित हड्डपा मृदभांड बनाने से है।
2. इसका संबंध प्रागैतिहासिक शल्क उपकरण बनाने से है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?

- | | |
|------------------|--------------------|
| (a) केवल 1 | (b) केवल 2 |
| (c) 1 और 2 दोनों | (d) न तो 1, न ही 2 |

उत्तर: (b) ‘लेवलोइस तकनीक’, मध्य पुरापाषाण काल (लगभग 3,00,000-50,000 ईसा पूर्व) की शल्क उपकरण बनाने की एक विशिष्ट विधि है, न कि छिद्रित हड्डपा मृद्घांड बनाने की। इसमें पत्थर के कोर को आकार देकर एक नुकीला, परतदार औजार सटीकता से निर्मित किया जाता है। इन औजारों का प्रयोग प्रारंभिक होमो सेपियन्स और निंदरथल मानवों द्वारा काटने, खुरचने और शिकार करने के लिए किया जाता था। कुछ अन्य बुनियादी शल्क उपकरण (फ्लेक-टूल) बनाने की तकनीकें हैं - क्लैवटोनियन विधि (जिसमें बड़े शल्क उपकरण बनाने के लिए निर्हाइ तकनीक का उपयोग किया जाता है) और मॉस्टरियन या डिस्क कोर तकनीक (जिसमें एक या दोनों सतहों पर पूरे कोर मार्जिन के चारों ओर केन्द्राभिमुख फ्लेकिंग की विशेषता होती है)।

6. पुरापाषाणिक औजारों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: [CDS (II) परीक्षा, 2023]

1. कर्नाटक के गुलबर्गा जिले में स्थित ईसामपुर पत्थर के औजारों के निर्माण का विष्यात केंद्र था जो कामता हल्ला नाम की छोटी मौसमी सरिता (स्ट्रीम) के किनारे पर अवस्थित था।
2. पुरापाषाणिक ब्लेड एक चपटा औजार होता है, जिसकी लंबाई उसकी चौड़ाई से दुगुनी से अधिक होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?

- | | |
|------------------|--------------------|
| (a) केवल 1 | (b) केवल 2 |
| (c) 1 और 2 दोनों | (d) न तो 1, न ही 2 |

उत्तर: (c) वर्ष 1983 में खोजा गया ईसामपुर, कर्नाटक के गुलबर्गा (अब कलबुर्गी) जिले में, मौसमी नदी कामता हल्ला के पास स्थित है। भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण और डेक्कन कॉलेज द्वारा उत्थनित, यह स्थल होमिनिन मानव औजार निर्माण पर प्रकाश डालता है। गॉर्बट ब्रूस फूट एक ब्रिटिश भूविज्ञानी और पुरातत्त्वविद् थे जिन्होंने भारत में पहला पुरापाषाण औजार (पल्लवरम हस्त कुलहाड़ी, 1863) चेन्नई में खोजा था और भारतीय प्रागैतिहासिक काल के इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पुरापाषाणकालीन ब्लेड एक परतदार औजार होता है जिसकी लंबाई उसकी चौड़ाई से कम से कम दोगुनी होती है, जिसे लेवलोइस जैसी तकनीकों का उपयोग करके बनाया जाता है। ये ब्लेड उच्च पुरापाषाण काल (40,000-10,000 ईसा पूर्व) के विशिष्ट औजार हैं और बेहतर दक्षता को दर्शाते हैं।

7. निम्नलिखित में से वह कौन-सी एक रीति नहीं है जिसमें प्राचीन भारत में राजा उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए प्रयास करते थे?

[NDA & NA (II) परीक्षा, 2023]

- (a) विभिन्न देवी-देवताओं के साथ जुड़ना
(b) बड़ी-बड़ी उपाधियाँ धारण करना
(c) उच्च कर लगाना
(d) प्रदेशों पर विजय प्राप्त करना और अपने राज्य में विलय करना

उत्तर: (c) उच्च कर प्रशासन, सेना और बुनियादी ढाँचे को चलाने के लिए एक वित्तीय साधन थे, न कि उच्च स्थान या प्रतिष्ठा हासिल करने के लिए अत्यधिक कराधान अक्सर जनता में अशांति और विद्रोह का कारण बनता था।

विकल्प (a), (b), और (d) सही नहीं हैं:

उच्च स्थान निम्नलिखित रीतियों से प्राप्त किया जाता था:

- ❖ विष्णु, शिव या ईश्वर जैसे देवताओं के साथ दिव्य संबंध या जुड़ाव; अश्वेध यज्ञ करना या मंदिर निर्माण करवाना। उदाहरण: गुरुओं ने इस प्रकार की उपाधियों का प्रयोग किया: परमभागवत (विष्णु का परम भक्त) शासक की दैवीय वैधता का दावा करने के लिए।
- ❖ महाराजाधिराज, चक्रवर्ती, परमेश्वर और अश्वेध कर्ता जैसी भव्य उपाधियों का उपयोग शाही महत्वाकांक्षा को दर्शाता है। अशोक, समुद्रगुप्त जैसे शासकों द्वारा इनका उपयोग किया गया।
- ❖ सैन्य विजय और विस्तार, शिलालेखों और दरबारी साहित्य में महिमामंडित, जैसा कि समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति में है।

8. भारत में निम्नलिखित में से किस नगर के निकट कुषाण शासकों की बृहदाकार प्रतिमाएँ खोजी गई हैं? [NDA & NA (I) परीक्षा, 2023]

- | | |
|-------------|------------------|
| (a) करनाल | (b) रोपड (Ropar) |
| (c) हिस्थार | (d) मथुरा |

उत्तर: (d) मथुरा शहर (उत्तर प्रदेश) कुषाण राजवंश (प्रथम-तृतीय शताब्दी ई.) के अधीन एक प्रमुख सांस्कृतिक, राजनीतिक और मूर्तिकला का केंद्र बन गया था।

- ❖ मथुरा से एक महत्वपूर्ण सप्राट कनिष्ठ की शीशविहीन मूर्ति प्राप्त हुई है जो दूसरी शताब्दी ई. की है।
- ❖ मथुरा संग्रहालय में संरक्षित कनिष्ठ, हुविष्क और वासुदेव की मूर्तियाँ मध्य एशियाई पोशाक (जूते, लंबे कोट) को दर्शाती हैं, जिन पर शिलालेख और शाही शक्ति के प्रतीक अंकित हैं।

9. रबातक शिलालेख (Rabatak Inscription) के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है? [NDA & NA (I) परीक्षा, 2023]

- (a) यह कुषाण वंशावली पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है।
(b) इसमें कनिष्ठ का 'राजाओं के राजा और ईश्वर के पुत्र' के रूप में उल्लेख किया गया है।
(c) 23-पंक्तियों का यह शिलालेख गांधारी भाषा में लिखा गया है।
(d) इसमें उन राज्यों के नामों का उल्लेख है जो कनिष्ठ के साम्राज्य के भाग थे।

उत्तर: (c) रबातक शिलालेख (1993), जो अफगानिस्तान के रबातक दर्रे के पास खोजा गया था, यह कनिष्ठ प्रथम के शासनकाल (लगभग 127-150 ई.) का है। यह 23 पंक्तियों का एक शिलालेख है जो बैक्ट्रियन भाषा में ग्रीक लिपि में लिखा गया है, न कि गांधारी भाषा में।

विकल्प (a), (b), और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ यह कुषाण वंशावली पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, तथा कुजुल कडफिसेस, विम तक्टु और विम कडफिसेस को कनिष्ठ के पूर्ववर्ती के रूप में सूचीबद्ध करता है।
- ❖ कनिष्ठ को “महाराजा राजाधिराज देवपुत्र” (महान राजा, राजाओं का राजा, ईश्वर का पुत्र) के रूप में संदर्भित किया गया है, जो शाही उपाधियों और दैवीय वैधता पर प्रकाश डालता है।
- ❖ कनिष्ठ के साम्राज्य के अंतर्गत कई क्षेत्रों की सूची दी गई है: कौशाम्बी, साकेत, पाटलिपुत्र, उज्जैन, चम्पा, जो उसके विशाल क्षेत्रीय शासन की पुष्टि करते हैं।

10. सबसे पहले अशोक के शिलालेखों को निम्नलिखित में से किसने पढ़ा था? [CGS (P) परीक्षा, 2023]

- (a) विलियम जोन्स (b) जॉन मार्शल
(c) जेम्स प्रिंसेप (d) अलेक्जेंडर कनिंघम

उत्तर: (c) ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी और बंगाल एशियाटिक सोसाइटी के सचिव, जेम्स प्रिंसेप (1799-1840) वर्ष 1837 में ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों को पढ़ने वाले पहले व्यक्ति थे, जिससे अशोक के शिलालेख (268-232 ईसा पूर्व) को पढ़ा जा सका। उन्होंने “पियदस्ती” की पहचान सप्रात अशोक के रूप में की, जिससे मौर्यकालीन शासन और बौद्ध मूल्यों का पता चला। जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल (1836-1838) में प्रकाशित उनके शोध ने भारतीय पुलातेखास्त और ऐतिहासिक पुनर्निर्माण में एक निर्णायक मोड़ ला दिया।

विकल्प (a), (b) और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ **विलियम जोन्स (1746-1794):** एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की (1784); संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद किया; शिलालेखों या ब्राह्मी लिपि पर कार्य नहीं किया।
- ❖ **जॉन मार्शल (1876-1958):** भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) के महानिदेशक (1902-1928); हड्डा, मोहनजोदहो में उत्खनन का नेतृत्व किया; ब्राह्मी लिपि को पढ़ने से संबद्ध नहीं।
- ❖ **अलेक्जेंडर कनिंघम (1814-1893):** “भारतीय पुरातत्त्व के जनक”; भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) की स्थापना की (1861); प्रिंसेप के कार्यों पर निर्भर; “द स्तूप ऑफ भरहुत” (1879), “एंशिएंट जियोग्राफी ऑफ इंडिया” (1871) प्रकाशित की। उन्होंने ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों के अर्थ निकालने में जेम्स प्रिंसेप के अधीन काम किया।

11. प्राचीन भारत में किस चीनी यात्री ने ‘मध्य भारत की यात्रा के अभिलेख’ नामक दैनिकी (डायरी) लिखी थी? [NDA & NA (I) परीक्षा, 2022]

- (a) वांग हुएन-सी (Wang Xuance)
(b) ह्वेनसांग (Xuanzang)
(c) इतिंग (Yijing)
(d) ली यिवियाओ (Li Yibiao)

उत्तर: (b) चीनी बौद्ध भिक्षु ह्वेनसांग (ह्वेन-त्सांग) ने हर्षवर्धन के शासनकाल (629-645 ई.) में प्रामाणिक बौद्ध ग्रंथों का संग्रह करने और विश्व के प्रथम आवासीय अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, नालंदा में बौद्ध धर्म का अध्ययन करने के लिए भारत का दौरा किया। उन्होंने “दा तांग शियु जी” (पश्चिमी क्षेत्रों पर महान तांग अभिलेख) की रचना की, जिसे “मध्य भारत की यात्राओं के अभिलेख” के रूप में भी जाना जाता है, जिसमें हर्षवर्धन के शासनकाल के दौरान भारतीय धर्म, राजनीति, समाज, भूगोल और बौद्ध मठवासी जीवन का विस्तृत विवरण दिया गया है।

विकल्प (a), (c) और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ वांग हुएन-सी, 7वीं शताब्दी के तांग दूत (643-657 ई.) और सैन्य कमांडर थे, जो भारत में राजनयिक/सैन्य मिशनों के लिए जाने जाते थे, लेकिन इस यात्रा वृत्तांत के लिए नहीं।

- ❖ इतिंग एक चीनी भिक्षु (635-713 ई.) थे, जो 7वीं शताब्दी में भारत आए और नालंदा में अध्ययन किया, लेकिन उनकी रचनाएँ अलग हैं। उन्होंने “दक्षिणी सागर से धर भेजी गई बौद्ध प्रथाओं का अभिलेख” नामक पुस्तक लिखी।
- ❖ ली यिवियाओ एक चीनी अधिकारी थे जिन्होंने भारत में एक राजनयिक मिशन का नेतृत्व किया था। वे वांग हुएन-सी के साथ आए थे।

12. प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वर्णित प्राचीन शहर तक्षशिला की अवस्थिति का निरूपण किसने किया?

- (a) अलेक्जेंडर कनिंघम (b) आर.डी. बैनर्जी
(c) जॉन मार्शल (d) दया राम साहनी

उत्तर: (a) 19वीं सदी के मध्य के ब्रिटिश भारत में, प्राचीन तक्षशिला के खंडहरों को ब्रिटिश पुरातत्त्वविद् अलेक्जेंडर कनिंघम ने फिर से खोजा और सर जॉन मार्शल ने बड़े पैमाने पर खुदाई की। वर्ष 1980 में, यूनेस्को ने तक्षशिला को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया।

13. जेम्स प्रिंसेप को इनमें प्रयुक्त किस लिपि को समझने का श्रेय दिया जाता है?

- (a) अशोक कालीन ब्राह्मी (b) खोष्ठी
(c) तमिल ब्राह्मी (d) हड्डा की मुद्रे

उत्तर: (a) ब्रिटिश विद्वान और ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी जेम्स प्रिंसेप ने वर्ष 1837-1838 में अशोक के शिलालेखों (268-232 ईसा पूर्व), विशेष रूप से दिल्ली-टोपरा स्तंभ से ब्राह्मी लिपि को सफलतापूर्वक पढ़ा।

14. निम्नलिखित में से कौन सा शिलालेख रेशम बुनकरों के एक संघ का इतिहास दर्ज करता है?

- (a) इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख (b) रुद्रामन का जूनागढ़ शिलालेख
(c) मंदसौर शिलालेख (d) धौली शिलालेख

उत्तर: (c) गुप्त शासक कुमारगुप्त और औलिकर साम्राज्य बनकरों के एक संघ का शिलालेख (437 और 473 ई.) में रेशम बुनकरों (पट्टावर्यों) के एक संघ का उल्लेख है, जो दक्षिण गुजरात (लाट) से मालवा आकर बस गए थे। उन्होंने एक सूर्य मंदिर की स्थापना की और रेशम उत्पादन एवं व्यापार में संलग्न हो गए। यह प्राचीन भारत में कारीगर संघों का एक दुर्लभ शिलालेखीय प्रमाण है। अमरकोश और वृहद् संहिता जैसे ग्रंथों में क्षौम और पट्टावर्य जैसी रेशम किसी का भी उल्लेख है और विभिन्न कारीगरों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

15. शासकों के नाम और चित्र वाले पहले सिक्के किसके द्वारा जारी किए गए थे?

- (a) गुप्त (b) मौर्य
(c) हिंद-यवन (d) सातवाहन

उत्तर: (c) हिंद-यवन शासकों (180 ईसा पूर्व-10 ईस्वी) ने सबसे पहले शासकों के नाम और चित्र वाले सिक्के जारी किए। ये सिक्के यूनानी और खरोष्ठी शिलालेखों के साथ हेलेनिस्टिक सिक्का परंपरा का पालन करते थे। उल्लेखनीय रूप से, मेनांडर प्रथम (जिसे मिलिंद के नाम से भी जाना जाता है) ने अपने चित्र और नाम वाले सिक्के जारी किए। इन सिक्कों के पीछे अक्सर यूनानी देवता या प्रतीक अंकित होते थे, जो यूनानी और भारतीय सांस्कृतिक तत्त्वों के मिश्रण को दर्शाते हैं।

16. भारत में पाषाण युग के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

[CDS (I) परीक्षा, 2020]

1. विभिन्न युगों को पत्थर के औजारों के प्रकार और शिल्पविज्ञान के आधार पर पहचाना जाता है।
2. विभिन्न युगों के अंदर औजारों के प्रकार और शिल्पविज्ञान में कोई क्षेत्रीय विभिन्नता नहीं है।
3. विभिन्न युगों की पाषाण युग संस्कृति पूरे उपमहाद्वीप में एक अमिश्रित एकरेखीय ढंग से एकसमान विकसित हुई।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- | | |
|------------|-----------------|
| (a) केवल 1 | (b) केवल 1 और 2 |
| (c) केवल 3 | (d) 1, 2 और 3 |

उत्तर: (a) भारत में पाषाण युग को औजारों के प्रकार और विनिर्माण तकनीकों के आधार पर तीन मुख्य अवधियों में विभाजित किया गया है, जो एक समान कालक्रम की अपेक्षा तकनीकी प्रगति को दर्शाता है:

- ❖ **पैलियोलिथिक (पुरापाषाण काल):** इसकी विशेषता हाथ की कुलहाड़ियों और क्लीवर जैसे मुख्य औजार हैं।
- ❖ **मेसोलिथिक (मध्य पाषाण युग):** माइक्रोलिथ और ब्लेड उपकरणों के लिए जाना जाता है।
- ❖ **नवपाषाण (नव पाषाण युग):** पॉलिश किए गए पत्थर के औजारों और जमीन पर बनी कुलहाड़ियों से चिह्नित।

कथन 2 और 3 सही नहीं हैं:

- ❖ पुरातात्त्विक साक्ष्य स्थानीय संसाधनों, जलवायु और संस्कृति से प्रभावित महत्वपूर्ण क्षेत्रीय विविधताओं को उजागर करते हैं। उदाहरण के लिए, सोन घाटी (उत्तर-पश्चिम भारत) में मुख्यतः चॉपर उपकरण पाए जाते हैं; भीमबेटका (मध्य भारत) में लेवलॉइस शल्क और ब्लेड पाए जाते हैं, बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश) में पुरापाषाण काल से नवपाषाण काल तक एक सतत क्रम दिखाई देता है; और दक्षिण भारत (अन्तिरमपक्कम, हुन्सगी) में अचेतलियन हस्त कुलहाड़ियाँ प्रमुखता से पाई जाती हैं।
- ❖ नवपाषाण संक्रमण असमान थे, कश्मीर ने 3000 ईसा पूर्व तक कृषि को अपना लिया था, मेहरगढ़ (उत्तर-पश्चिम भारत) में लगभग 7000 ईसा पूर्व प्रारंभिक नवपाषाण काल दिखाई देता है, जबकि दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में लगभग 1000 ईसा पूर्व तक मध्यपाषाण काल के बने रहने के साक्ष्य मिलते हैं।

2. सिंधु घाटी सभ्यता

17. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए: [CAPF परीक्षा, 2023]

सूची-I (हड्पा स्थल)	सूची-II (स्थान)
A. नागेश्वर	1. उत्तर प्रदेश
B. आलमगीरपुर	2. राजस्थान
C. कालीबंगा	3. सौराष्ट्र
D. राखीगढ़ी	4. हरियाणा

कूट:

- (a) A-3, B-1, C-2, D-4
- (b) A-4, B-2, C-1, D-3
- (c) A-4, B-1, C-2, D-3
- (d) A-3, B-2, C-1, D-4

उत्तर: (a)

- ❖ (A-3) से सुमेलित है: नागेश्वर, सौराष्ट्र (गुजरात) में एक तटीय हड्पा स्थल, चूड़ियों, करछुलों और शंखों से जड़ाई के लिए एक विशेष शैल-कार्य केंद्र था, जो कच्चे माल की आसान पहुँच के कारण फल-फूल रहा था, जो शिल्प विशेषज्ञ और क्षेत्रीय व्यापार नेटवर्क को उजागर करता था।
- ❖ (B-1) से सुमेलित है: उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में हिंडन नदी के किनारे स्थित आलमगीरपुर सबसे पूर्वी हड्पा स्थल है, जहाँ सीमित शहरी साक्ष्य हैं, लेकिन हड्पा मृदभांड और चीनी मिट्टी के मनके जैसी महत्वपूर्ण खोजें हुई हैं, जो सिंधु घाटी सभ्यता (2600-1900 ईसा पूर्व) की पूर्वी सीमा को चिह्नित करती हैं।

❖ (C-2) से सुमेलित है: कालीबंगन, हनुमानगढ़, राजस्थान में, घग्गर नदी पर, जुते हुए खेतों (विश्व स्तर पर सबसे पुराने साक्ष्य), अग्नि वेदियों, हड्पा अवशेषों के लिए प्रसिद्ध है, जो कृषि और अनुष्ठान जीवन को दर्शाते हैं।

❖ (D-4) से सुमेलित है: हरियाणा के हिसार में राखीगढ़ी सबसे बड़े हड्पा स्थलों में से एक है, जिसमें योजनाबद्ध शहर लेआउट, सड़कें, जल निकासी और चल रही खुदाई से विविध शिल्प उत्पादन का पता चलता है।

18. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

[NDA & NA परीक्षा (II), 2023]

1. चोलिस्तान के कई स्थलों और बनावली (हरियाणा) में मिट्टी से बने हल के प्रतिरूप मिले हैं।
2. कालीबंगन में जोते गए खेत का साक्ष्य मिला है जो कि हड्पा सभ्यता के विकसित चरण से संबंधित है।
3. कालीबंगन पर जोते गए खेत में हल रेखाओं के दो समूह एक-दूसरे को समकोण पर काटते हुए विद्यमान थे, जो यह दर्शाते हैं कि उसमें एक साथ दो अलग-अलग फसलें उगाई जाती थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं?

- | | |
|-----------------|-------------------------------|
| (a) 1, 2 और 3 | (b) केवल 2 और 3 |
| (c) केवल 1 और 3 | (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं |

उत्तर: (a) हड्पा या सिंधु सभ्यता तीसरी और दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के आरंभिक काल की शहरी, साक्षर संस्कृति को संदर्भित करती है, जो ताप्रपाषाण युग (ताप्र - ताँबा, पाषाण-पत्थर) के दौरान विकसित हुई थी। यह सबसे उन्नत ताप्रपाषाण संस्कृति थी।

कथन (1), (2) और (3) सही हैं:

- ❖ चोलिस्तान (पाकिस्तान) और बनावली (हरियाणा) में पाए गए टेराकोटा हल मॉडल तकनीकी प्राप्ति और कृषि उपकरणों के प्रति जागरूकता दर्शाते हैं।
- ❖ कालीबंगन (राजस्थान) एकमात्र हड्पा स्थल है जहाँ जुते हुए खेत (जीवाशम हल रेखा) के सबसे पुराने ज्ञात पुरातात्त्विक साक्ष्य मिले हैं, जो हड्पा अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व को दर्शाते हैं।
- ❖ समकोण पर एक दूसरे को काटते हुए दो हल रेखा पैटर्न (ग्रिड की तरह) से बहु-फसल/अंतर-फसल प्रणाली का पता चलता है, जिसमें संभवतः गेहूँ और जौ या दालें और अनाज एक साथ उगाए जाते हैं।

19. निम्नलिखित में से कौन सा हड्पा केंद्र शंख वस्तुएँ बनाने में माहिर था? [CGS (P) परीक्षा, 2023]

- | | |
|----------------|--------------|
| (a) बालाकोट | (b) कालीबंगन |
| (c) मोहनजो-दगो | (d) बनावली |

उत्तर: (a) नागेश्वर और बालाकोट तट के निकट सिंधु घाटी सभ्यता के स्थल हैं। ये शैल वस्तुओं – जिनमें चूड़ियाँ, कलछुल और जड़ाऊ पत्थर शामिल हैं – के निर्माण के विशिष्ट केंद्र थे, जिन्हें अन्य बस्तियों में ले जाया जाता था। इसी प्रकार, यह भी संभव है कि चन्हूदड़ो और लोथल से तैयार उत्पाद (जैसे - मनके) मोहनजोदड़ो और हड्पा जैसे बड़े शहरी केंद्रों में ले जाए जाते थे।

विकल्प (b), (c) और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ **कालीबंगन:** अपने जुते हुए खेतों और प्रारंभिक कृषि पद्धतियों के साक्ष्य के लिए जाना जाता है।
- ❖ **मोहनजोदड़ो:** एक प्रमुख शहरी केंद्र जो अपने नियोजित शहर लेआउट, महान स्नानागार और उन्नत जल निकासी के लिए जाना जाता है, लेकिन विशेष रूप से शैल कलाकृतियों में विशिष्ट नहीं है।
- ❖ **बनावली:** चोलिस्तान और बनावली (हरियाणा) में हल के टेराकोटा मॉडल पाए गए हैं।

20. निम्नलिखित में से किस हड्डपा नगर के नगर-दुर्ग और निचले-शहरी क्षेत्रों में कई बड़े कुंड और जलाशय मिले हैं? [CDS (II) परीक्षा 2022]
- बनावली
 - मोहनजोदहो
 - धोलावीरा
 - राखीगढ़ी

उत्तर: (c) वर्तमान गुजरात (कच्छ के रण में खादिर द्वीप पर) स्थित धोलावीरा अपनी उन्नत जल प्रबंधन प्रणाली के लिए उल्लेखनीय है, जिसमें गढ़ और निचले शहर दोनों में कई बड़े कुंड और जलाशय (सबसे बड़ा 73 मीटर लंबा) पाए जाते हैं। धोलावीरा को तीन भागों में विभाजित किया गया था: गढ़, मध्य शहर और निचला शहरा यह एकमात्र हड्डपा शहर है जिसका लेआउट इतना स्पष्ट रूप से विभाजित है। इसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (2021) के रूप में मान्यता प्राप्त है।

21. निम्नलिखित में से किस हड्डपा स्थल में यज्ञवेदी (फायर ऑल्टर) मिले हैं? [NDA & NA (II) परीक्षा, 2022]

- कालीबंगा
- हड्डपा
- मोहनजोदहो
- राखीगढ़ी

उत्तर: (a) हड्डपा सभ्यता में पाई जाने वाली अग्नि वेदियाँ आनृष्टानिक उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त संरचनाएँ हैं, जो अक्सर अग्नि आधारित समारोहों से जुड़ी होती हैं। हड्डपा सभ्यता में अग्नि वेदियाँ मुख्यतः कालीबंगन और लोथल में पाई जाती हैं।

22. निम्नलिखित में से किस काल-खंड के दौरान चोलिस्तान क्षेत्र में स्थित अधिकांश पूर्ण विकसित हड्डपा स्थलों का परित्याग कर दिया गया?

[CAPF परीक्षा, 2021]

- लगभग 2250 ई० पू०
- लगभग 2000 ई० पू०
- लगभग 1800 ई० पू०
- लगभग 1700 ई० पू०

उत्तर: (c) ऐसे प्रमाण हैं कि लगभग 1800 ईसा पूर्व तक चोलिस्तान जैसे क्षेत्रों में अधिकांश परिपक्व हड्डपा स्थल वीरान हो चुके थे। 1900 ईसा पूर्व के बाद भी जिन कुछ हड्डपा स्थलों पर लोग रहते रहे, उनमें भौतिक संस्कृति का रूपांतरण हुआ प्रतीत होता है, जिसकी पहचान सभ्यता की विशिष्ट कलाकृतियों- बाट, मुहरें, विशेष मनकों - के लुप्त होने से होती है। लेखन कला, लंबी दूरी का व्यापार और शिल्प विशेषज्ञता भी लुप्त हो गई।

23. निम्नलिखित में से कौन-सा हड्डपा स्थल सीप की वस्तुएँ बनाने के लिए विशिष्ट केंद्र था?

[NDA & NA (I) परीक्षा, 2021]

- लोथल
- बालाकोट
- अमरी
- कोट दीजी

उत्तर: (b) नागेश्वर और बालाकोट, दोनों बस्तियाँ तट के पास स्थित हैं। ये सीप की वस्तुएँ बनाने के विशेष केंद्र थे – जिनमें छूड़ियाँ, कलछुल और जड़ाऊ चीजें शामिल थीं – जिन्हें दूसरी बस्तियों में ले जाया जाता था।

24. निम्नलिखित में से कौन सा/से हड्डपा सभ्यता का/के सर्वाधिक विशिष्ट शिल्प है/हैं?

[CAPF परीक्षा, 2020]

- स्टीएटाइट सील
- मानकीकृत अनुपात की ईंट
- स्वर्ण कंगन (छूड़ियाँ)
- रजत (चांदी) पीकदान

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- केवल 1
- केवल 1 और 2
- 2, 3 और 4
- 1, 2 और 3

उत्तर: (b) हड्डपा (सिंधु घाटी) सभ्यता (2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व) अपने उन्नत शहरी नियोजन, मानकीकरण और विशिष्ट भौतिक संस्कृति के लिए जानी जाती है। कथन 1 और 2 सही हैं:

- ❖ शैलखट (स्टीएटाइट) मुहरें: शैलखट से बनी इन मुहरों पर पशु आकृतियाँ (जैसे- गेंडा, कूबड़ वाला बैल) और सिंधु लिपि अंकित हैं, जिनका उपयोग व्यापार और प्रशासन के लिए किया जाता था। ये इस सभ्यता की सबसे प्रतिष्ठित कलाकृतियाँ हैं।

- ❖ मानकीकृत ईंटें: हड्डपा वासी 4:2:1 अनुपात (लंबाई:चौड़ाई:ऊंचाई) वाली एकसमान ईंटों का उपयोग करते थे, जो कि विशाल सभ्यता में उन्नत शहरी नियोजन और समन्वय को दर्शाता है, जैसा कि मोहनजोदहो और हड्डपा जैसे स्थलों में देखा गया है।

कथन 3 और 4 सही नहीं हैं: हालाँकि सोने की छूड़ियाँ पाई गई हैं, परन्तु हड्डपा सभ्यता के लिए अद्वितीय नहीं हैं। इसी प्रकार, चाँदी का पीकदान के इस सभ्यता की विशिष्ट कलाकृति होने का कोई महत्वपूर्ण प्रमाण नहीं है।

25. हड्डपा लिपि के बारे में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक सही नहीं है? [CAPF परीक्षा, 2020]

- इसमें लगभग चार सौ सांकेतिक चिह्न हैं।
- यह दायीं से बायीं ओर लिखी गई थी।
- इसे अस्थि शलाकाओं और आभूषणों पर पाया गया है।
- यह मेलहू के लोगों से संबंध रखती है।

उत्तर: (d) हड्डपा लिपि में लगभग 400-450 अलग-अलग चिह्न हैं। ये चिह्न मुहरों, मिट्टी के बर्तनों, हड्डी की छड़ों, आभूषणों और ताबे के औजारों पर पाए गए हैं, जो इसके व्यापक उपयोग का संकेत देते हैं।

- ❖ इस लिपि को आमतौर पर दाएँ से बाएँ लिखा जाता था, कुछ उदाहरणों में बुस्ट्रोफेंडन (बारी-बारी से दिशाएँ) प्रवृत्ति को चिह्नित किया गया है।

- ❖ मोहनजोदहो, हड्डपा, कालीबंगा और धोलावीरा जैसे प्रमुख स्थलों से प्राप्त पुरातात्त्विक साक्षयों से इन विशेषताओं की पुष्टि होती है। हालाँकि, यह लिपि अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है और इसके प्रतीकों को कोई निश्चित अर्थ या ध्वन्यात्मक मूल्य नहीं दिया जा सका है।

विकल्प (d) सही है: “मेलुहा” शब्द मेसोपोटामिया के ग्रंथों (लगभग 2400-2000 ईसा पूर्व) में दिखाइ देता है, जो संभवतः सिंधु घाटी क्षेत्र को संदर्भित करता है, लेकिन हड्डपा लिपि में कोई साक्ष्य नहीं है कि यह “मेलुहा” को संदर्भित करती है।

26. निम्नलिखित में से किस निर्माणी (शिल्पशाला) स्थल से चूना पत्थर और चट्ट फलक (ब्लेड) ढेर उत्पन्न किए जाते थे और सिंधु में विभिन्न हड्डपा बस्तियों में भेजे जाते थे? [CDS (I) परीक्षा, 2020]

- सुकुर और रोहड़ी पहाड़ियाँ
- राजस्थान में खेतड़ी
- चगाई पहाड़ियाँ
- बलूचिस्तान की हाड़ियाँ

उत्तर: (a) वर्तमान सिंधु, पाकिस्तान में स्थित सुकुर और रोहड़ी पहाड़ियाँ (पत्थर के औजार उत्पादन केंद्र), हड्डपा सभ्यता (2600-1900 ईसा पूर्व) के दौरान महत्वपूर्ण कारखाना स्थल थे। इन पहाड़ियों में कच्चा माल, विशेष रूप से चट्ट और चूना पत्थर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। यहाँ, समानांतर-किनारे वाले चट्ट ब्लेड और चूना पत्थर के औजारों का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता था और मोहनजोदहो और हड्डपा जैसे प्रमुख हड्डपा शहरी केंद्रों में वितरित किया जाता था।

- विकल्प (b), (c) और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ खेतड़ी (राजस्थान): चट्ट/चूना पत्थर के लिए नहीं, बल्कि तांबे के खनन के लिए जाना जाता है। मोहनजोदहो और हड्डपा जैसे सिंधु सभ्यता के शहरों को तांबे के औजार और कलाकृतियाँ भेजी जाती थी। ताप्र पाषाण व्यापार नेटवर्क का हिस्सा था।

- ❖ चगाई हिल्स (बलूचिस्तान): सिंधु घाटी सभ्यता की धातुकर्म पंरपराओं को बनाए रखने के लिए टिन और तांबा उपलब्ध कराया, चट्ट ब्लेड उत्पादन से नहीं जुड़ा था।

- ❖ बलूचिस्तान की पहाड़ियाँ: प्रारंभिक धातु विज्ञान के लिए महत्वपूर्ण (जैसे- मेहरगढ़, तांबा प्रगल्न), लेकिन पत्थर के औजारों के बड़े पैमाने पर उत्पादन से जुड़ी नहीं हैं।

3. वैदिक कालीन इतिहास

27. ऋग्वेद की देवियों के बारे में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

[CDS (I) परीक्षा, 2025]

- (a) ऊषस् अस्वस्थता से मुक्ति का प्रतीक है।
- (b) सिनीवाली संतान प्रदान करती है।
- (c) अदिति उषा-काल की देवी है।
- (d) राका वाणी की देवी है।

उत्तर: (b) चारों वेदों में सबसे प्राचीन ऋग्वेद की रचना लगभग 1500-1000 ईमा पूर्व हुई थी; प्रकृति, ब्रह्मांडीय व्यवस्था और मानवीय सरोकारों के विभिन्न देवताओं को समर्पित ऋचाओं का एक समृद्ध संग्रह है। जहाँ इंद्र, अग्नि और वरुण जैसे पुरुष देवता वैदिक देवताओं में प्रमुख हैं, वहाँ कई देवियाँ भी पूजनीय हैं, जो अस्तित्व के महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे भोग, वाणी, प्रजनन क्षमता और ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतीक हैं।

विकल्प (b) सही है: सिनीवाली एक वैदिक देवी हैं जो प्रजनन क्षमता और प्रसव से जुड़ी है। ऋग्वेद में वर्णित, उन्हें चौड़े कूलहों वाली और गोरी भुजाओं वाली बताया गया है, और विशेष रूप से प्रजनन क्षमता प्रदान करने और गर्भ में भ्रूण के सफल जन्म को सुनिश्चित करने के लिए उनकी पूजा की जाती है।

विकल्प (a), (c) और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ **ऊषस् (उषा):** भोग की देवी, जीवन के दैनिक नवीनीकरण का प्रतिनिधित्व करती है।
- ❖ **अदिति:** एक मातृ देवी, जिन्हें प्रायः आदित्य (सूर्य देवता) की माता कहा जाता है। अनंतता, असीमता और स्वतंत्रता का प्रतीक।
- ❖ **राका:** एक चंद्र देवी, जो पूर्णिमा और प्रजनन क्षमता से जुड़ी है।

28. ऋग्वेद में सबसे अधिक बार किस देवता का उल्लेख किया गया है?

[CGS (P) परीक्षा, 2025]

- | | |
|-----------|-----------|
| (a) इंद्र | (b) अग्नि |
| (c) सूर्य | (d) वरुण |

उत्तर: (a) ऋग्वेद में सबसे अधिक बार इंद्र का उल्लेख किया गया है, और लगभग 250 सूक्त उन्हें समर्पित हैं, जो ऋग्वैदिक ग्रंथ का लगभग एक चौथाई हिस्सा है। उन्हें वज्र, वर्षा और युद्ध के देवता के रूप में पूजा जाता है।

सबसे प्रसिद्ध मिथक सर्प दानव वृत्र को पराजित करना है, जिसने जल को रोक रखा था। इस कृत्य ने इंद्र को वर्षा और समृद्धि का देवता बना दिया। उन्हें पुंरुदर (किले तोड़ने वाला), वृत्रहन (वृत्र का वध करने वाला) और मधवन (उदारवादी) भी कहा जाता है। उनका महत्व प्रारंभिक वैदिक समाज के सैन्य और कृषि संबंधी सरोकारों को दर्शाता है, जो एक दिव्य रक्षक के रूप में उनकी भूमिका को उजागर करता है।

विकल्प (b), (c) और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ अग्नि देवता, अग्निदेव, लगभग 200 स्तोत्रों के साथ दूसरे सर्वाधिक प्रमुख देवता हैं। वे यज्ञ अनुष्ठानों में मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं।
- ❖ सूर्य (सूर्य देव) और वरुण (ब्रह्मांडीय व्यवस्था के देवता) महत्वपूर्ण हैं, लेकिन उनका आह्वान बहुत कम किया गया है।

29. ऋग्वेद में अनाज (Cereals) के लिए किन शब्दों का प्रयोग किया गया है?

[CDS (II) परीक्षा, 2024]

- | | |
|---------------------|------------------------|
| (a) गोधूम और ब्रीहि | (b) यव और धान्य |
| (c) तिल और खल | (d) प्रियंगु और श्यामक |

उत्तर: (b)

❖ सबसे प्राचीन वैदिक ग्रंथ ऋग्वेद में कृषि और अनाज फसलों का कभी-कभी उल्लेख किया गया है।

❖ यव शब्द, जौ को संदर्भित करता है जो ऋग्वेद में मुख्य भोजन और अनुष्ठानों में वर्णित एक प्रमुख अनाज है।

❖ धन्या, अनाज या अनाज के लिए एक सामान्य शब्द है, जिसमें जौ, चावल या गेहूँ शामिल हैं, और इसका उपयोग ऋग्वेद में प्रसाद के लिए भी किया जाता है।

❖ ये शब्द वैदिक लोगों की कृषि-पशुपालन जीवनशैली को दर्शाते हैं, जहाँ जौ को चावल जैसे बाद के मुख्य खाद्यान्मों से अधिक महत्व दिया जाता था।

विकल्प (a), (c) और (d) सही नहीं हैं:

❖ **गोधूम और ब्रीहि:** ये शब्द क्रमशः गेहूँ और चावल को संदर्भित करते हैं, लेकिन वे बाद के वैदिक साहित्य (जैसे, अथर्ववेद या यजुर्वेद) में अधिक बार दिखाई देते हैं, ऋग्वेद में प्रमुखता से नहीं।

❖ **तिल और खल:** तिल का तात्पर्य तिल से है जिससे सबसे पहले व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला वनस्पति खाद्य-तेल प्राप्त हुआ, जिसका उपयोग अनुष्ठानों में किया जाने लगा और खल का तात्पर्य खलिहान से है, न कि अनाज से।

❖ **प्रियंगु और श्यामक:** दो मोटे अनाजों (मिलेटस) प्रियंगु (संभवतः काकुम या कङ्गनी) और श्यामक (सामा या सामा) का उल्लेख बाद के वैदिक ग्रंथों में किया गया है, लेकिन ऋग्वेद में प्रमुखता से नहीं।

30. वैदिक यज्ञों की प्रथा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

[CAPF परीक्षा, 2023]

1. श्रौत (वैदिक यज्ञों) में तीन प्रकार की अग्नियों का उपयोग शामिल है - गार्हपत्य (गृहस्थायी की अग्नि), आह्वानीय (नैवेद्य अग्नि) और दक्षिणामिनि (दक्षिण-अग्नि)।

2. माना जाता है कि इन अग्नियों को विभिन्न आकार के कुंडों में स्थापित किया जाता था, अर्थात् गार्हपत्य के लिए वर्गाकार, आह्वानीय के लिए गोलाकार और दक्षिणामिनि के लिए आयताकार।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही हैं?

- | | |
|------------------|--------------------|
| (a) केवल 1 | (b) केवल 2 |
| (c) 1 और 2 दोनों | (d) न तो 1, न ही 2 |

उत्तर: (a) यज्ञ शब्द 'यज्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है पूजा करना, त्याग करना या प्रदान करना। इसका तात्पर्य देवताओं को आहुति देना है और इसे देवता के प्रति द्रव्य का त्याग माना जाता है। होम विधिवत रूप से पवित्र गृह्ण अग्नि में आज्ञ (धी) डालने की क्रिया है।

कथन 1 सही है: श्रौत (वैदिक) यज्ञों में तीन पवित्र अग्नियों का प्रयोग किया जाता था:

- ❖ **गार्हपत्य:** गृहस्थ की अग्नि, सदैव जलती हर्दी।
- ❖ **आह्वानीय:** दिव्य आहुति के लिए अग्नि।
- ❖ **दक्षिणामिनि:** दक्षिणी अग्नि, जो पूर्वजों से जुड़ी है।

ये जटिल वैदिक अनुष्ठानों का आधार थी। इन अग्नियों का उल्लेख शतपथ ब्राह्मण और यजुर्वेद जैसे वैदिक साहित्य में अच्छी तरह से मिलता है। ये अग्निहोत्र, सोम यज्ञ और अग्निचयन अनुष्ठानों (लगभग 1500-500 ईसा पूर्व) का मूल आधार थी।

कथन 2 सही नहीं है: अग्नि वेदियों के आकार थे:

- ❖ **गार्हपत्य:** वृत्ताकार (वर्गाकार नहीं)
- ❖ **आह्वानीय:** वर्गाकार (गोल नहीं)
- ❖ **दक्षिणामिनि:** अर्धवृत्ताकार (आयताकार नहीं)

ये आकृतियाँ प्रतीकात्मक थीं और वैदिक अनुष्ठानों में निश्चित थीं। ये प्रतीकात्मक आकृतियाँ शुल्वसूत्रों और अनुष्ठान पुस्तकों द्वारा निश्चित थीं, मनमाने ढंग से नहीं।

31. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए: [CAPF परीक्षा, 2022]

सूची-I (नदी का वैदिक नाम)	सूची-II (आधुनिक नाम)
A. दृशद्वती	- चेनाब
B. आस्किनी	- चौटांग
C. वितस्ता	- रावी
D. परुष्णी	- झेलम

कूट:

- (a) A-2, B-4, C-1, D-3 (b) A-2, B-1, C-4, D-3
 (c) A-3, B-1, C-4, D-2 (d) A-3, B-4, C-1, D-2

उत्तर: (b)

वैदिक नदी	आधुनिक नाम	महत्वपूर्ण तथ्य
दृशद्वती	चौटांग	हरियाणा की मौसमी नदी; सरस्वती प्रणाली का हिस्सा थी; पवित्र ब्रह्मावर्त की पूर्वी सीमा को चिह्नित करती थी; प्रारंभिक वैदिक भूगोल में इसका उल्लेख है।
अस्किनी	चेनाब	पंजाब की पाँच नदियों में से एक; ऋग्वैदिक ऋचाओं में पवित्र; सप्त सिंधु क्षेत्र का हिस्सा; सरस्वती के पश्चिम में बहती थी।
वितस्ता	झेलम	वेरीनाग (कश्मीर) से निकलती है; कश्मीर धाटी से होकर बहती है; स्थानीय परंपराओं में इसका नाम संरक्षित है; वैदिक ब्रह्माण्ड विज्ञान में इसका महत्व है।
परुष्णी	रावी	दस राजाओं के युद्ध का स्थल; सिंधु नदी की महत्वपूर्ण सहायक नदी; सतलुज और चिनाब (चेनाब) के बीच बहती थी; प्राचीन जनजातीय संघर्षों में इसका उल्लेख मिलता है।

32. प्रारंभिक वैदिक काल में निम्नलिखित में से किस नदी के तट पर दस

राजन युद्ध हुआ था?

- (a) सरस्वती (b) दृशद्वती
 (c) परुष्णी (d) शुतुद्रि

उत्तर: (c) दस राजाओं युद्ध (दशराज्ञ युद्ध), परुष्णी नदी (आधुनिक रावी) के तट पर लड़ा गया था। भरत जनजाति के राजा सुदास ने, अपने पुरोहित वशिष्ठ के मार्गदर्शन में, पुरु, यदु, तुर्वसा, अनु, द्रुह्यु, अलीना, भलानस, पकथा, शिव और विसानिन सहित दस जनजातियों के एक संघ को हराया।

33. निम्नलिखित में से किस एक को मौर्यपूर्व काल के सोलह 'महाजनपदों' में से सूचीबद्ध नहीं किया गया है? [CAPF परीक्षा, 2020]

- (a) कुरु (b) वत्स
 (c) गांधार (d) कलिंग

उत्तर: (d) सोलह महाजनपद शक्तिशाली राज्य या गणराज्य थे जो छठी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान उत्तरी और मध्य भारत में मौजूद थे, जैसा कि अंगुत्तर निकाय (एक बौद्ध धर्मग्रंथ) जैसे ग्रंथों में दर्ज है।

विकल्प (d) सही है: कलिंग वास्तव में एक शक्तिशाली और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण राज्य था (विशेष रूप से अशोक के कलिंग युद्ध में उल्लेख किया गया गया है), लेकिन यह बौद्ध ग्रंथों में पाए जाने वाले सोलह महाजनपदों की विहित सूची में नहीं दिखाई देता है।



4. मौर्य काल तथा मौर्योत्तर काल का इतिहास

34. अशोक के शिलालेखों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है? [CDS (I) परीक्षा, 2025]

- (a) केरल में मिला महा शिलालेख संस्कृत में है।
 (b) बिहार में लघु शिलालेख केवल पाटलिपुत्र में मिलते हैं।
 (c) धौली महा शिलालेख में कलिंग युद्ध का उल्लेख किया गया है।
 (d) उत्तराखण्ड में कालसी महा शिलालेखों का स्थल है।

उत्तर: (d)/(c) अशोक के शिलालेख तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के हैं, जो भारतीय उपमहाद्वीप में चट्टानों और स्तंभों पर उक्तिर्थी शिलालेखों का एक समृद्ध संग्रह है।

विकल्प (d) सही है: कालसी उत्तर भारत का एकमात्र स्थल है जहाँ अशोक के प्रमुख शिलालेख (शिलालेख I से XIV) पाए गए हैं।

विकल्प (a), (b) और (c) सही नहीं हैं:

- ❖ केरल में अशोक का कोई भी प्रमुख शिलालेख नहीं मिला है। उनका कोई भी शिलालेख संस्कृत में नहीं है; अधिकांश प्राकृत में ब्राह्मी लिपि में लिखे गए हैं, और कुछ यूनानी या अरामेड्क भाषा में लिखे गए हैं।
 ❖ बिहार में, अशोक के लघु शिलालेख मुख्यतः कैम्बुर पहाड़ियों के सासाराम में खोजे गए हैं, पाटलिपुत्र में नहीं।
 ❖ कलिंग युद्ध और अशोक के पश्चाताप का उल्लेख पृथक शिलालेख - I में मिलता है, धौली के किसी भी महा शिलालेख में नहीं। हालाँकि, कुछ स्रोत इसे एक प्रमुख शिलालेख भी मानते हैं।

35. निम्नलिखित में से कौन-सा वर्तमान राज्य-क्षेत्र, अशोक के साम्राज्य की सीमाओं से बाहर था? [CDS (I) परीक्षा, 2025]

- (a) ब्रह्मपुत्र धाटी, असम
 (b) बलूचिस्तान
 (c) उत्तरी बंगाल
 (d) कश्मीर धाटी

उत्तर: (d) हालाँकि कश्मीर बाद में, खासकर कनिष्ठ के शासनकाल में, एक प्रमुख बौद्ध केंद्र बन गया, लेकिन कश्मीर धाटी में अशोक के शिलालेखों या प्रशासन के प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। यह सीमांत क्षेत्र में या अप्रत्यक्ष प्रभाव में रहा होगा, लेकिन मौर्य साम्राज्य में पूरी तरह से एकीकृत नहीं था।

PW Only IAS विशेष

- ❖ रोमिला थापर और उपिंदर सिंह का मत है कि अशोक के समय तक पूर्वी भारत, जिसमें बंगाल के कुछ हिस्से और संभवतः पश्चिमी असम भी शामिल था, मौर्य नियंत्रण में आ गया था।
- ❖ अशोक के कई शिलालेख आधुनिक पाकिस्तान में पाए गए हैं, जिनमें शाहबाजगढ़ी भी शामिल है जो बलूचिस्तान में या उसके पास स्थित है। यह क्षेत्र मौर्य साम्राज्य की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर स्थित था।
- ❖ अशोक का क्षेत्रीय नियंत्रण पुंड्रवर्धन तक विस्तृत था, जो उत्तरी बंगाल (आधुनिक पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के कुछ हिस्से) से मेल खाता है। महास्थानगढ़ में एक अशोक का शिलालेख मिला है, जो यहाँ उसके शासन की पुष्टि करता है।

36. बौद्ध देवी हारीती के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

[CDS (I) परीक्षा, 2025]

- (a) बुद्ध ने उसे रक्त-पिपासु यक्षी से एक परोपकारी मातृ-स्वरूपा में परिवर्तित कर दिया था।
- (b) वह ज्ञान की मानवी रूप (Feminine Personification) है।
- (c) वह लोगों को आठ महान् भय से बचाती है।
- (d) वह उषा-काल से संबद्ध एक योद्धा देवी है।

उत्तर: (a) हारीती बौद्ध पौराणिक कथाओं में एक महत्वपूर्ण पात्र है, जिन्हें मूलतः एक यक्षी (महिला प्रकृति आत्मा) के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने राजगृह (वर्तमान बिहार) में बच्चों का अपराह्ण करके उन्हें खा लिया था। उनकी करुणा को जगाने के लिए, बुद्ध ने उनके अपने बच्चे को छिपा दिया, जिससे उन्हें दूसरों पर आई पीड़ा का एहसास हुआ। इससे बहुत दुखी होकर, हारीती ने पश्चाताप किया और बच्चों की एक दयालु संरक्षक बन गई, और मातृत्व और प्रजनन क्षमता की पूजनीय देवी बन गई।

PW Only IAS विशेष

- ❖ प्रज्ञापारमिता, ज्ञान का स्त्री रूप है।
- ❖ दया की बौद्ध देवी तारा, लोगों को आठ महान् भय से बचाती है।
- ❖ वैदिक परंपरा में उषा जैसी देवी को भोर से जोड़ा गया है।

37. प्राचीन भारत में, निम्नलिखित में से किस महाजनपद में समूह-शासन

(Oligarchy) था? [N.D.A. & N.A. (I) परीक्षा, 2025]

- (a) वज्जि (b) कोशल
- (c) गांधार (d) मगध

उत्तर: (a) वज्जि महाजनपद, जिसकी राजधानी वैशाली थी, लिच्छवियों सहित आठ कुलों का एक संघ था। यह गण-संघ प्रणाली का पालन करता था, एक कुलीनतरीय गणराज्य जहाँ निर्णय वरिष्ठों या कुलीनों की सभाओं द्वारा लिए जाते थे।

38. अंतरीय एक परिधान है जिसे मौर्य काल में लोगों द्वारा पहना जाता था।

यह: [CDS (II) परीक्षा, 2024]

- (a) शरीर पर ओढ़ा जाने वाला बिना सिला हुआ कपड़ा था।
- (b) एक सिला हुआ परिधान जिसमें आस्तीन वाला अँगरखा (Tunic) होता था।
- (c) विशेष रूप से महिलाओं द्वारा प्रयुक्त सिर आवरण था।
- (d) कपड़े की पट्टियों को एक साथ सिलकर बनाया गया तथा कमर पर डोरी से बांधा जाने वाला वस्त्र था।

उत्तर: (a) मौर्य काल (लगभग 322-185 ईसा पूर्व) के दौरान अंतरीय एक प्रमुख निचला वस्त्र था। यह बिना सिले कपड़े का एक टुकड़ा होता था जिसे कमर के चारों ओर लपेटा जाता था, पैरों के बीच से गुजारा जाता था और एक मेखला या कच्छा (कर्धनी) से बांधा जाता था, जो पारंपरिक धोती की तरह काम करता था। पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा पहना जाने वाला यह वस्त्र साँची, भरुत और यक्ष-यक्षी की मौर्यकालीन मूर्तियों में दिखाई देता है। उत्तरीय (ऊपरी वस्त्र) अक्सर इसके साथ पहना जाता था।

39. मौर्य प्रशासन के उच्च पदों और संबंधित विभागों के निम्नलिखित युग्मों

पर विचार कीजिए: [CDS परीक्षा (II), 2024]

- | | |
|---------------|---------------------------------|
| 1. समाहर्तु | : मुख्य राजस्व संग्रहकर्ता |
| 2. दौवारिक | : सेना प्रमुख |
| 3. अक्षपटल | : अभिलेख-सह-लेखापरीक्षा अधिकारी |
| 4. संनिधात्री | : कोषाध्यक्ष |

ऊपर दिए गए युग्मों में से कौन-से युग्म सही सुमेलित हैं?

- | | |
|-----------------|--------------------|
| (a) केवल 1 और 2 | (b) केवल 1, 3 और 4 |
| (c) केवल 3 और 4 | (d) 1, 2, 3 और 4 |

उत्तर: (b) मौर्य प्रशासन (322-185 ईसा पूर्व) प्रणाली केंद्रीकृत थी, जिसमें एक संचित नौकरशाही व्यवस्था थी, जैसा कि कौटिल्य के अर्थशास्त्र और अशोक के शिलालेखों में वर्णित है। उच्च पदों में शामिल थे:

- ❖ **समाहर्ता:** राजस्व का मुख्य संग्रहक; कर संग्रह, वित्त का प्रबंधन, और गुप्त सेवा का नेतृत्व करता था।
- ❖ **अक्षपटल:** अभिलेख-सह-लेखा परीक्षा अधिकारी; खाते ("अक्ष") और रजिस्टर ("पटला") बनाए रखते थे, और सभी विभागों का लेखा परीक्षण करते थे।
- ❖ **संनिधात्री:** कोषाध्यक्ष; खजाने की रखवाली और एकत्रित राजस्व के सत्यापन के लिए जिम्मेदार था।
- ❖ **दौवारिक:** वह राजमहल का एक अधिकारी (चैंबरलेन) होता था जो शाही महल के भीतर सुरक्षा और प्रवेश नियंत्रण का कार्यभार संभालता था।
- ❖ **सेनापति या महासेनापति:** वास्तविक सेना प्रमुख होता था।

अन्य उल्लेखनीय अधिकारियों में अमात्य (मंत्री), प्रदेश (प्रांतीय गवर्नर), राजुक (जिला स्तर पर राजस्व और न्यायिक अधिकारी), युक्ता (सचिवीय सहायता देने वाले कनिष्ठ अधिकारी), सीनाध्यक्ष (कृषि अधीक्षक), धर्मस्थ (न्यायाधीश) और प्रदेशत्री (अपराधियों के दमन के लिए जिम्मेदार अधिकारी) शामिल थे।

40. मौर्य राज्य और वनवासियों के संबंध में, निम्नलिखित कथनों पर विचार

कीजिए: [CDS (I) परीक्षा, 2024]

1. वनवासियों को नए प्रकार के राजनीतिक और आर्थिक प्रभुत्व का सामना करना पड़ा और उन्हें अधीनस्थ बनाने और आत्मसात् करने की आवश्यकता के परिणामस्वरूप इन लोगों को शाही क्षेत्र में शामिल नहीं करने के पहले के रैये में बदलाव आया।
2. राज्य ने मान्यता दी कि वन उपज पर वनवासियों का एकाधिकार है।
3. राज्य वर्षों के संरक्षण के लिए विनियत था और इस उद्देश्य से वर्षों को जलाए जाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।
4. वनवासियों को राज्य की सेवा में लगाया जा सकता था और उनका सैनिक, जासूस और हत्यारों के रूप में उपयोग किया जा सकता था।

उपर्युक्त में से कितना/कितने कथन सही हैं/हैं?

- | | |
|-------|-------|
| (a) 1 | (b) 2 |
| (c) 3 | (d) 4 |

उत्तर: (a) कथन 1 सही है: मौर्य राज्य ने वन समुदायों को अपनी प्रशासनिक और आर्थिक प्रणालियों में व्यवस्थित रूप से एकीकृत किया तथा संसाधनों और श्रम पर बहिष्कार से रणनीतिक नियंत्रण की ओर कदम बढ़ाया। यह नीति कलिंग (अशोक द्वारा एक क्रूर अभियान के बाद 260 ईसा पूर्व में विजित) तक विस्तारित हुई, जिसकी वन संपदा और तटीय व्यापार मार्गों ने इसे महत्वपूर्ण बना दिया था।

कथन 2, 3 और 4 नहीं हैं:

- ❖ मौर्य राज्य ने इसे मान्यता नहीं दी, वन उपज को जनजातीय संपत्ति के रूप में उपयोग किया जाता था, लेकिन राज्य-नियंत्रित प्रणालियों - अंतपात जैसे अधिकारियों के माध्यम से सक्रिय रूप से लकड़ी, हाथी और अन्य संसाधनों का दोहन किया जाता था।

- ❖ कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वनों के आर्थिक/राजनीतिक उपयोग को प्राथमिकता दी गई थी (जैसे, कृषि या किलेबंदी के लिए वनों की सफाई)। वनों को जलाने पर प्रतिवांध परिस्थितिजन्य थे, पूर्णतः नहीं।
- ❖ यद्यपि वनवासियों को कभी-कभी सेना के रूप में या जासूसी के लिए प्रयोग किया जाता था, लेकिन यह कोई सार्वभौमिक या आधिकारिक राज्य नीति नहीं थी।

PW Only IAS विशेष

अर्थशास्त्र में वनों की निगरानी के लिए “वनरक्षक” (वन अधिकारी) जैसी भूमिकाओं का उल्लेख किया गया है।

41. प्राचीन भारत के निम्नलिखित महाजनपदों में से, किसकी राजधानी तक्षशिला थी?

- | | |
|------------|-----------|
| (a) कुरु | (b) काशी |
| (c) गांधार | (d) अवंती |

उत्तर: (c) अंगुत्तर निकाय के अनुसार, गांधार सोलह महाजनपदों में से एक था, जिसकी राजधानी तक्षशिला (आधुनिक ग्रावलपिंडी, पाकिस्तान के पास) थी। तक्षशिला अपने विश्वविद्यालय के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ पाणिनि, कौटिल्य और जीवक जैसे विद्वानों ने अध्ययन किया था। कुषाण साम्राज्य के दौरान, विशेष रूप से कनिष्ठ के शासनकाल में, तक्षशिला गांधार कला और महायान बौद्ध धर्म का केंद्र बन गया।

विकल्प (a), (b), और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ **कुरु:** इसकी राजधानी हस्तिनापुर थी, जो वर्तमान उत्तर प्रदेश में स्थित है।
- ❖ **काशी:** इसकी राजधानी पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित ‘वाराणसी’ थी।
- ❖ **अवंती:** इसकी राजधानीयाँ उज्जयिनी और महिष्मती थी, जो वर्तमान मध्य प्रदेश में स्थित है।

42. भारत में लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व से शहरी केंद्रों के उद्घव के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

[NDA & NA (I) परीक्षा, 2024]

- उन सभी का विकास महाजनपदों की राजधानियों से दूर हुआ।
- प्रमुख नगर आवागमन मार्गों पर स्थित थे।
- इनमें से अनेक वाणिज्यिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों के बड़े केंद्र थे।

उपर्युक्त में से कितना/कितने कथन सही हैं/हैं?

- | | |
|-------|--------------|
| (a) 1 | (b) 2 |
| (c) 3 | (d) कोई नहीं |

उत्तर: (b) कथन 1 सही नहीं है: राजगृह (मगाध), वैशाली, उज्जयिनी (अवंती), पाटलिपुत्र और तक्षशिला (गांधार) जैसे नारीय केंद्र अपने-अपने महाजनपदों की राजधानियों के रूप में उभरो नारीय विकास प्रशासनिक, राजनीतिक और व्यावसायिक महन्त्व से दृढ़ता से जुड़ा था, और कई नगर राजधानियों के रूप में कार्यरत थे।

कथन 2 और 3 सही हैं:

- ❖ पाटलिपुत्र, तक्षशिला और उज्जयिनी जैसे केंद्र व्यापार मार्गों और नदी घाटियों के किनारे राजनीतिक रूप से स्थित थे, जिससे उनका आर्थिक और सामरिक महत्व बढ़ गया।
- ❖ पाटलिपुत्र, मथुरा, वाराणसी और तक्षशिला जैसे शहरी केंद्र व्यापार, धार्मिक चर्चाओं, कारीगरों की उपलब्धता और शाही प्रशासन के लिए बहुक्रियाशील केंद्रों के रूप में विकसित हुए।

43. अशोक के शिलालेखों में, निम्नलिखित राजनीतिक केंद्रों में से किसका उल्लेख मिलता है?

[CAPF परीक्षा, 2023]

- | | |
|-----------------|--------------|
| (a) इंद्रप्रस्थ | (b) कौशांबी |
| (c) सुवर्णगिरि | (d) कांदाहार |

उत्तर: (c) सुवर्णगिरि, जिसे सुवर्णगिरि या सुवणगिरि के नाम से भी जाना जाता है, कर्णाटक में आधुनिक कनकगिरि के पास स्थित है। इसका उल्लेख अशोक के लघु शिलालेख I (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) में मौर्य साम्राज्य के दक्षिणी प्रांतीय मुख्यालय के रूप में प्रत्यक्ष रूप से मिलता है। यह एक वायसराय (उप प्रमुख) शहर के रूप में कार्य करता था, जहाँ एक कुमार (शाही राजकुमार) को वायसराय नियुक्त किया गया था, जो प्रशासन और अशोक की धम्म नीति के कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार था। सुवर्णगिरि शब्द का अर्थ है ‘स्वर्ण पर्वत’।

विकल्प (a), (b) और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ **इंद्रप्रस्थ:** महाभारत का एक पौराणिक शहर, जिसका उल्लेख अशोक के किसी शिलालेख में नहीं है।
- ❖ **कौशांबी:** यद्यपि यह ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है और वर्तम महाजनपद से जुड़ा है, फिर भी अशोक के शिलालेखों में इसका प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं है।
- ❖ **कांदाहार या कंधार (अराकोसिया):** अफगानिस्तान में स्थित ग्रीक-अरमाइक द्विभाषी शिलालेखों का स्थल, भारतीय उपमहाद्वीप के भीतर एक केंद्रीय प्रशासनिक केंद्र न होकर एक सीमांत चौकी थी।

44. कुषाण शासकों द्वारा प्रतिपादित बंधुता की धारणा (Notion of Kinship) निम्नलिखित में से किसके माध्यम से सर्वोत्तम रूप से प्रमाणित है?

[CDS (I) परीक्षा, 2023]

- | |
|---|
| (a) देवताओं से उनका तादात्म्य (Identification) |
| (b) धार्मिक संस्थानों को अनुदान |
| (c) शिलालेखीय प्रशस्ति (Inscriptional Panegyrics) |
| (d) सिक्कों और मूर्तिकला (Sculpture) |

उत्तर: (d) कुषाण शासकों (पहली-तीसरी शताब्दी ई.), विशेषकर कनिष्ठ ने, सिक्कों और मूर्तियों के माध्यम से अपनी रिश्तेदारी, दैवीय वंश और वैधता की धारणा को प्रतिपादित किया। उनके सिक्कों पर उन्हें यूनानी, ईरानी और भारतीय देवताओं (जैसे, शिव, बुद्ध, मिथ्रा) के साथ दर्शाया गया था, जो ब्रह्मांडीय सत्ता के प्रतीक थे। “देवपुत्र” (ईश्वर का पुत्र) जैसी उपाधियाँ उनके दिव्य वंश को पुष्ट करती थी। मथुरा और गांधार की मूर्तियों में शासकों को शाही पोशाक में दिखाया गया है, जो शाही पहचान और राजवंशीय निरंतरता पर ज़ोर देती हैं।

विकल्प (a), (b) और (c) सही नहीं हैं:

- ❖ देवताओं के साथ पहचान से धार्मिक वैधता को बढ़ावा मिलता है, रिश्तेदारी को नहीं।
- ❖ अनुदान धार्मिक संरक्षण को दर्शाते हैं, न कि रिश्तेदारी की विचारधारा को।
- ❖ अभिलेखीय प्रशस्ति-गीतों में शासकों की प्रशंसा की गई है, लेकिन उनमें वंश के दृश्यात्मक प्रतीकवाद का अभाव है।

45. कनगनहल्ली पुरातात्त्विक स्थल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

[CDS परीक्षा (I), 2023]

- यह भीमा नदी के तट पर स्थित है।
- कनगनहल्ली स्तूप के अवशेष पहली और तीसरी शताब्दी CE के बीच के हो सकते हैं।
- इस स्थल पर सम्राट् अशोक की प्रतिमा मिली थी।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

- | | |
|-----------------|-----------------|
| (a) केवल 1 और 2 | (b) केवल 2 और 3 |
| (c) केवल 1 और 3 | (d) 1, 2 और 3 |

उत्तर: (d) कथन 1, 2 और 3 सही हैं।

- ❖ कनगनहल्ली, चितापुर तालुका में भीमा नदी के बाएँ किनारे पर स्थित है। कर्णाटक के कलबुर्गी जिले में स्थित यह एक महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल है जो बड़े सन्ति परिसर का हिस्सा है।

- ❖ भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा की गई खुदाई में एक महास्तूप (अधोलोक महा-चैत्य) का पता चला है जो सातवाहन काल के दौरान पहली से तीसरी शताब्दी ई.पू. तक का है।
- ❖ सम्राट अशोक को दर्शाता एक प्रस्तरचित्र मिला है, जिस पर ब्राह्मी लिपि में “राय अशोक” लिखा है। यह अशोक का एकमात्र ज्ञात प्रस्तर चित्रण है जो उनके नाम से पहचाना जाता है।

46. निम्नलिखित में से अशोक के किस लघु शिलालेख में, राजा का निजी नाम अशोक का उल्लेख है? [NDA & NA (II) परीक्षा, 2023]

(a) मास्की (b) बहुपुर
(c) बैराट (d) सहस्रम

उत्तर: (a) वर्ष 1915 में कर्नाटक के रायचूर में खोजा गया मास्की लघु शिलालेख, अशोक का प्रथम शिलालेख है, जिसमें व्यक्तिगत नाम “अशोक” का उल्लेख है और “देवानामपिय अशोक” (देवताओं का प्रिय, अशोक) वाक्यांश का प्रयोग किया गया है। अधिकांश अन्य शिलालेखों में केवल “देवानामपिय” या “पियदसि” (अर्थात् “वह जो दया की दृष्टि से देखता है”) जैसी उपाधियों का ही उल्लेख है। “अशोक” नाम वाले अन्य शिलालेखों में गुजराती (मध्य प्रदेश), निजूर और उदेगोलम (कर्नाटक) के शिलालेख शामिल हैं।

विकल्प (b), (c), और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ **बहुपुर:** दिल्ली के पास स्थित, यह अशोक का एक और लघु शिलालेख है। इसमें “देवानामप्रिय” जैसी शाही उपाधियों का प्रयोग किया गया है, लेकिन उनके नाम का उल्लेख नहीं है।
- ❖ **बैराट:** राजस्थान में स्थित, इस स्थल पर बैराट मंदिर शिलालेख और बैराट शिलालेख हैं, जो अशोक द्वारा बौद्ध धर्म के प्रचार से संबंधित सामग्री के लिए उल्लेखनीय हैं।
- ❖ **सहस्रम:** बिहार में स्थित, इस लघु शिलालेख में भी केवल “देवानामप्रिय” शीर्षक ही अंकित है।

47. निम्नलिखित में से किस शासक ने मगध साम्राज्य की राजधानी के रूप में पाटलिपुत्र की स्थापना की? [NDA & NA (I) परीक्षा, 2023]

(a) बिम्बिसार (b) बिंदुसार
(c) अजातशत्रु (d) अशोक

उत्तर: (c) हर्यक वंश के बिम्बिसार के पुत्र अजातशत्रु (लगभग 491-459 ईसा पूर्व) ने लगभग 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में मगध की राजधानी राजगुह से पाटलिपुत्र (पूर्व में पाटलिग्राम) स्थानांतरित कर दी थी। गांग और सोन नदियों के संगम पर स्थित, इस राजधानी को सामारिक कारणों से, विशेष रूप से वज्जि संघ का मुकाबला करने के लिए, किलेबंद किया गया था। बाद में, यह नंद, मौर्य और गुप्त शासकों के अधीन विकसित हुई। मौर्य दरबार का दौरा करने वाले यूनानी राजदूत मेगस्थनीज ने पाटलिपुत्र को लकड़ी की बाड़ और खार्ड से युक्त एक भव्य, किलेबंद शहर बताया था।

48. अफगानिस्तान में अशोक के शिलालेखों को निम्नलिखित में से किस लिपि में लिखा गया है? [CAPF परीक्षा, 2022]

(a) ब्राह्मी (b) शारदा
(c) खरोष्ठी (d) ग्रीक-अरामाईक

उत्तर: (d) अफगानिस्तान में अशोक के शिलालेख, विशेष रूप से केंद्रार द्विभाषी शिलालेख उक्फ शार-ए-कुना (लगभग 258 ईसा पूर्व), ग्रीक-अरामाईक भाषी आबादी तक धर्म का संचार किया जा सके। इन्हें धर्मलिपि (“धर्मपरायणता के आदेश”) के रूप में जाना जाता है। अशोक ने स्पष्टता सुनिश्चित करने के लिए क्षेत्रवार लिपियों को अनुकूलित किया। ग्रीक-अरामाईक शिलालेख मौर्यों के हेतेनिस्टिक दुनिया के साथ संपर्क को दर्शाते हैं और धर्म को भारतीय हृदयभूमि से परे प्रसार के प्रयासों को दर्शाते हैं।

विकल्प (a), (b) और (c) सही नहीं हैं:

- ❖ **ब्राह्मी:** मध्य, पूर्वी, दक्षिणी भारत में प्रमुखतः प्रयुक्त, अफगानिस्तान में प्रयुक्त नहीं।
- ❖ **खरोष्ठी:** यह उत्तर-पश्चिमी भारत और पाकिस्तान के कुछ हिस्सों में पाई गई है, अरामाईक भाषा से प्रभावित है, कुछ अशोक के शिलालेखों (जैसे, मानसेहरा) में इसका प्रयोग किया गया है, लेकिन मुख्य रूप से अफगानिस्तान में नहीं।
- ❖ **शारदा:** लगभग 8वीं शताब्दी ई. में विकसित, कश्मीर में प्रयुक्त, अशोक के शासनकाल (तीसरी शताब्दी ई.पू.) के दौरान नहीं। शारदा लिपि, कश्मीर और आसपास की घटियों में स्थित हिंदू अल्पसंख्यकों द्वारा कश्मीरी भाषा के लिए प्रयुक्त लेखन प्रणाली थी।

49. भारत में अश्वारोही सेना के युद्ध के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए: [CDS (II) परीक्षा 2022]

1. लोहे की रकाब ने कवचित योद्धा को बिना गिरे अश पर दृढ़ता से बैठने को संभव बनाया था।
2. लोहे की रकाब की वजह से अश्वारोही, बिना संघात के झटके के कारण गिरे, शरीर के पास बल्लमों को कस कर पकड़े हुए धावा (आक्रमण) भी कर पाते थे।

उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?

- | | |
|------------------|--------------------|
| (a) केवल 1 | (b) केवल 2 |
| (c) 1 और 2 दोनों | (d) न तो 1, न ही 2 |

उत्तर: (c): लोहे के रकाब ने सवारों की स्थिरता बढ़ाकर और शक्तिशाली भाला प्रहारों को सक्षम बनाकर भारत में घुड़सवार युद्ध में क्रांति ला दी, क्योंकि इससे बख्तरबंद योद्धा बिना गिरे मजबूती से बैठ सकते थे और टक्कर के दौरान भी संभल सकते थे। इस स्थिरता ने घुड़सवार युद्ध की रणनीति को बदलकर, कूच्छ लांस तकनीक को संभव बनाया।

विकल्प (c) सही है: मध्य प्रदेश के जूनापानी (पहली शताब्दी ईसा पूर्व) से प्राप्त पुरातात्त्विक साक्ष्य प्रारंभिक रकाब के उपयोग को दर्शाते हैं। राजपूत घुड़सवार सेना और तुर्क-अफगान आक्रमणों के साथ रकाब की भूमिका बढ़ी, जिससे घुड़सवार सेना के प्रभुत्व की तरफ व्यापक परिवर्तन आया। सवार की स्थिरता और घुड़सवार सेना की आक्रमण क्षमता पर दोनों कथन ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक रूप से सटीक हैं।

50. निम्नलिखित महाजनपदों में से, गण/संघ (अल्पतंत्र) को पहचानिए: [CDS (I) परीक्षा, 2022]

- | | |
|------------|-----------|
| (a) मगध | (b) वज्जि |
| (c) अवन्ती | (d) कोसल |

उत्तर: (b) वज्जि या वज्जिका संघ छठी शताब्दी ईसा पूर्व का एक गण-संघ (कुलीनतंत्रीय गणराज्य) था, जिसकी राजधानी वैशाली थी और इस पर लिच्छवियों का शासन था। राजतंत्र के विपरीत, जहाँ एक वंशानुगत राजा शासन करता है, भारत में प्रशासन गण-संघ का संचालन एक निर्वाचित राजा द्वारा एक बड़ी परिषद या सभाओं की सहायता से किया जाता था, जिसमें सभी महत्वपूर्ण कुलों और परिवारों के प्रमुख शामिल होते थे।

51. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, कौटिल्य के राज्य के समांग सिद्धांत का अंग नहीं था? [CDS परीक्षा (I) 2022]

- | | |
|------------|----------|
| (a) अमात्य | (b) जनपद |
| (c) दुर्ग | (d) धम्म |

उत्तर: (d) कौटिल्य के अर्थशास्त्र में समांग सिद्धांत (राज्य के सात अंग) का विवरण दिया गया है, जहाँ उन्होंने राज्य की अवधारणा को सात आवश्यक और अन्योन्याश्रित तत्त्वों (अंगों) के रूप में माना है, जो मानव शरीर के अंगों के समान हैं - स्वामिन (राजा), अमात्य (मंत्री), जनपद (क्षेत्र और लोग), दुर्ग (किला), कोष (कोष), दंड (सेना), और मित्र (सहयोगी)।

- ❖ कौटिल्य राज्य को एक जीवित संस्था मानते थे, जहाँ प्रभावी शासन के लिए प्रत्येक अंग को सामंजस्यपूर्ण ढंग से कार्य करना चाहिए। राज्य को सात बुनियादी घटकों में विभाजित करने से प्रत्येक घटक की व्यक्तिगत शक्ति या कमज़ोरी का आकलन करना संभव हो गया।
- ❖ नैतिक कानून की बौद्ध अवधारणा, धर्म, इस सिद्धांत का हिस्सा नहीं है। यह सिद्धांत नैतिक या धार्मिक सिद्धांतों से इतर, शासन-कला और शासन पर केंद्रित है। अशोक के शासनकाल में जिस धर्म पर ज़ोर दिया गया था, उसके विपरीत, कौटिल्य का सिद्धांत व्यावहारिक प्रशासन पर ज्यादा केंद्रित है।

52. बौद्धमत में अशोक की आस्था के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

[CDS (I) परीक्षा 2022]

- रुम्मिनदेई स्तम्भ अभिलेख और निगली सागर स्तंभ अभिलेख बौद्ध मत में अशोक की आस्था का स्पष्ट प्रमाण देते हैं।
- लघु शिलालेख-1 बौद्ध मत में अशोक की आस्था में अक्षमात आए परिवर्तन का प्रमाण देता है।

उर्ध्वकथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- | | |
|------------------|--------------------|
| (a) केवल 1 | (b) केवल 2 |
| (c) 1 और 2 दोनों | (d) न तो 1, न ही 2 |

उत्तर: (a) अशोक (शासनकाल लगभग 268-232 ईसा पूर्व), एक प्रमुख मौर्य शासक, बौद्ध धर्म अपनाने और धर्म के प्रचार के लिए प्रसिद्ध है। रुम्मिनदेई और निगली सागर स्तंभ शिलालेख जैसे शिलालेख उसकी बौद्ध आस्था को दर्शाते हैं।

कथन 1 सही है: रुम्मिनदेई स्तम्भ शिलालेख (तुम्भिनी, नेपाल) में अशोक द्वारा बुद्ध की जन्मस्थली की यात्रा, श्रद्धांजलि अर्पित करने तथा कर में छूट के साथ भूमि राजस्व को घटाकर आठवाँ हिस्सा करने का उल्लेख है।

निगली सागर स्तंभ शिलालेख (नेपाल) में कनकमुनि बुद्ध के स्तूप और उसके विस्तार के प्रति उनकी श्रद्धा दर्ज है, जो उनके बौद्ध संरक्षण की पुष्टि करता है।

कथन 2 सही नहीं है: लघु शिलालेख-1 में अशोक की धर्म के प्रति प्रतिबद्धता का उल्लेख है, लेकिन यह उसके धार्मिक विश्वास में अचानक परिवर्तन का नहीं बल्कि क्रमिक परिवर्तन का वर्णन करता है।

“मैं टाई वर्ष से अधिक समय से एक बौद्ध उपासक/बुद्ध-शक/शक रहा हूँ, लेकिन एक वर्ष से अधिक समय तक मैंने कोई खास प्राप्ति नहीं की। अब एक वर्ष से अधिक समय से मैं संघ के और निकट आ गया हूँ और अधिक उत्साही हो गया हूँ। भारत में जो देवता अब तक मनुष्यों के साथ संगति नहीं करते थे, अब उनके साथ घुल-मिल जाते हैं, और यह मेरे प्रयासों का ही परिणाम है।”

53. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए और सूचियों के नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

[NDA & NA (II) परीक्षा, 2022]

- | सूची-I (महामात्र) | सूची-II (कार्य) |
|------------------------|--------------------------------|
| A. अंत-महामात्र | 1. महिला कल्याण |
| B. इथिझर्ख-महामात्र | 2. धर्म का प्रचार |
| C. धर्म-महामात्र | 3. नगर प्रशासन से संबद्ध |
| D. नगलवियोहलक-महामात्र | 4. सीमांत क्षेत्रों के प्रभारी |

कूट:

- | | |
|------------------------|------------------------|
| (a) A-3; B-2; C-1; D-4 | (b) A-3; B-1; C-2; D-4 |
| (c) A-4; B-1; C-2; D-3 | (d) A-4; B-2; C-1; D-3 |

उत्तर: (c) चंद्रगुप्त मौर्य (322-298 ईसा पूर्व) द्वारा स्थापित मौर्य प्रशासनिक प्रणाली को अशोक महान (268-232 ईसा पूर्व) द्वारा कुशल शासन, सामाजिक सुधार और नैतिक अनुशासन के लिए महामात्र नामक विशेष अधिकारियों के माध्यम से विस्तारित और संस्थागत स्वरूप प्रदान किया गया था।

❖ (A-4) से सुमेलित है: अंत-महामात्र - “अंत” = सीमांत/सीमा मौर्य साम्राज्य के सीमावर्ती प्रांतों का प्रशासन करने के लिए नियुक्त किए गए थे। इनके कार्य थे: शाही नियंत्रण सुनिश्चित करना, सीमांत जनजातियों के साथ संबंधों का प्रबंधन करना, राजस्व एकत्र करना, राज्य की नीतियों को लागू करना और केंद्रीय सत्ता और परिधीय क्षेत्रों के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करना।

❖ (B-1) से सुमेलित है: इथिझर्ख-महामात्र - इसका अर्थ है “महिलाओं की अधीक्षक”। महिलाओं के कल्याण को सुनिश्चित करने, महिलाओं के अधिकारों, पारिवारिक विवादों से निपटने और महिला कलाकारों, वेश्याओं आदि की संस्थाओं की देखरेख के लिए नियुक्त। यह लैंगिक रूप से संवेदनशील शासन और सामाजिक सुधार के प्रति अशोक की चिंता को दर्शाता है।

❖ (C-2) से सुमेलित है: धर्म-महामात्र - अशोक के शासनकाल के 14वें वर्ष में नियुक्त धर्म अधिकारी थे। इन्होंने धर्म का प्रचार किया - नैतिक आचरण, करुणा, अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता और सभी प्राणियों के प्रति सम्मान पर ज़ोर दिया। विवादों का समाधान किया, कल्याण की देखरेख की ओर पूरे साम्राज्य में नैतिक अनुशासन को बढ़ावा दिया।

❖ (D-3) से सुमेलित है: नगलवियोहलक-महामात्र - पाटलिपुत्र जैसे शहरों में नगारीय शासन के प्रभारी थे। इनके कार्य थे: कानून-व्यवस्था, लोक निर्माण, स्वच्छता और नगर प्रशासन का प्रबंधन, शहरी केंद्रों की स्वच्छता, सुक्ष्मा और सुचारू संचालन सुनिश्चित करना। यह मौर्य साम्राज्य की संगठित नागरिक संरचना को दर्शाता है।

54. भारत में निम्नलिखित में से किस नदी को अलेक्जेंडर और उसकी सेना ने पार नहीं किया था?

[NDA & NA परीक्षा (II), 2022]

- | | |
|----------------|-----------------------------|
| (a) हाइफासिस | (b) एकेसिनेस (एसीसेस) |
| (c) हाइड्रोटेस | (d) हाइड्स्पेश (हाइडैस्पीज) |

उत्तर: (a) हाइफासिस, आधुनिक व्यास नदी को संदर्भित करता है। अलेक्जेंडर (सिकंदर) 326 ईसा पूर्व में हाइफासिस नदी तक पहुँचा, लेकिन उसे पार नहीं कर पाया। शक्तिशाली नंद राजाओं और गंगारिदाई संघ के भय से उसके सैनिकों ने विप्रोह कर दिया और पूर्व की ओर आगे बढ़ने से इनकार कर दिया।

विकल्प (b), (c), और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ एकेसिनेस (चेनाब): हाइड्स्पेश के युद्ध के बाद, सिकंदर ने एरियन के एनाबासिस के समर्थन से पूर्व की ओर अपने अभियान के हिस्से के रूप में एकेसिनेस को पार किया।
- ❖ हाइड्रोटेस (रावी): चिनाब और व्यास के बीच स्थित, सिकंदर और उसकी सेना ने व्यास की ओर बढ़ते हुए हाइड्रोटेस नदी को पार किया।
- ❖ हाइड्स्पेश (झेलम): राजा पोरस के विरुद्ध हाइड्स्पेश के युद्ध (326 ईसा पूर्व) का स्थल विजय के बाद, सिकंदर नदी पार करके पूर्व की ओर आगे बढ़ा।

55. मौर्य राजधानी पाटलिपुत्र का संबंध निम्नलिखित में से किन पुरातात्त्विक अवशेषों से है?

[CAPF परीक्षा, 2021]

- | | |
|---------------------------|--------------------------|
| (a) बुलंदीबाग और राजगृह | (b) कुम्राहर और मोर्चिरम |
| (c) कुम्राहर और बुलंदीबाग | (d) कुम्राहर और जलालगढ़ |

उत्तर: (c) मौर्य साम्राज्य (चौथी-तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) की राजधानी पाटलिपुत्र की पुरातात्त्विक रूप से पहचान वर्तमान पटना, बिहार में कुम्राहर या कुम्हरार और बुलंदीबाग के साथ की जाती है।

कुम्राहर में 80 स्तंभों वाले एक हॉल के अवशेष मिले हैं, जिसके बारे में माना जाता है कि यह मौर्यकालीन महल या सभा भवन का हिस्सा था, और इसमें पॉलिश किए हुए चुनार बलुआ पत्थर के स्तंभ हैं। डी. बी. स्पूनर (1912-1915) द्वारा किए गए उत्खनन और बाद के प्रयासों ने इसके महत्व की पुष्टि की।

बुलंदीबाग में लकड़ी की बाड़, किले की दीवारें, अंकित सिक्के, टेराकोटा की आकृतियाँ, मनके और मुहरें मिलीं, जो शाही सुरक्षा और प्रशासन में इसकी भूमिका का संकेत देते हैं। ये मेगस्थनीज के किलेबंद पाटलिपुत्र के वर्णन से मेल खाते हैं।

विकल्प (a), (b) और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ **राजगृह:** पूर्व मण्ड राजधानी, मौर्यकालीन पाटलिपुत्र का हिस्सा नहीं।
- ❖ **मोचरिम:** मोचरिम (प्राचीन नाम मुकुलिंड) भारत के बिहार राज्य के गया जिसे में स्थित है, जो बोधगया में महाबादि मंदिर से लगभग 1 किलोमीटर (0.62 मील) दक्षिण में है। यह निरंजना (फल्गु) नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है। यह गाँव मुचलिंद का घर है, जो एक प्राचीन तालाब है जहाँ बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद छह सप्ताह बिताए थे।
- ❖ **जलालगढ़:** एक मध्ययुगीन स्थल जिसका मौर्य काल से कोई संबंध नहीं है।

56. टोपरा स्थित अशोक स्तंभ के परिवहन का चित्रित वर्णन किसमें मिलता है?

- [CDS (II) परीक्षा, 2021]
- | | |
|-------------------------|-------------------|
| (a) तारीख-ए-फिरोज शाही | (b) तारीख- ए शाही |
| (c) सीरत- ए- फिरोज शाही | (d) अकबरनामा |

उत्तर: (a): अशोक स्तंभ को टोपरा से दिल्ली ले जाने का चित्रित वर्णन “तारीख-ए-फिरोज शाही” में मिलता है, जो ज़ियाउद्दीन बरसी द्वारा रचित एक ऐतिहासिक वृत्तांत है। यह ग्रन्थ दिल्ली सल्तनत के शासक फिरोज शाह तुगलक (शासनकाल 1351-1388) के शासनकाल का दस्तावेज है, जिन्हें दो अशोक स्तंभों—एक टोपरा (अब हरियाणा में) से और दूसरा मेरठ से—को दिल्ली स्थानांतरित करने का श्रेय दिया जाता है।

57. निम्नलिखित में से कौन-सा, सम्राट अशोक के धर्म का भाग नहीं था?

[NDA & NA (I) परीक्षा, 2021]

- | |
|--|
| (a) राजा का सम्मान करना |
| (b) अपने धर्म से भिन्न धर्मों के प्रति सहिष्णुता |
| (c) ब्राह्मणों का सम्मान करना |
| (d) अपनी प्रजा के कल्याण को बढ़ावा देना |

उत्तर: (a) अशोक का धर्म (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) एक व्यावहारिक, नैतिक संहिता थी जो सामाजिक सञ्चार, सहिष्णुता, अहिंसा और प्रजा के कल्याण पर केंद्रित थी, न कि अनुष्ठानों या व्यक्तिगत महिमामंडन पर। इसने ब्राह्मणों और श्रमणों के प्रति सम्मान (शिलालेख III, IV), धार्मिक सहिष्णुता (शिलालेख XII), लोक कल्याण, मानवीय प्रशासन, चिकित्सा देखभाल और धर्म-महामातृ की नियुक्ति (शिलालेख II, VI) पर जोर दिया। उन्होंने अपने सम्राज्य भर में चट्ठान, स्तंभ और गुफा शिलालेखों पर ब्राह्मी और खोरी लिपियों का इस्तेमाल किया। अशोक ने सत्य, उदारता, आत्म-संयम और करुणा को बढ़ावा दिया, किसी भी प्रकार की आत्म-प्रशंसा या “राजा का सम्मान” करने से मना किया। यह उनके धर्म को पारंपरिक शाही विचारधाराओं से अलग करता है।

5. गुप्त काल का इतिहास

58. गुप्तकाल की पूर्ववर्ती अवधि का शासक विद्यशक्ति निम्नलिखित किस राजवंश से संबद्ध है?

[CAPF परीक्षा, 2023]

- | | |
|------------|-------------|
| (a) वाकाटक | (b) चालुक्य |
| (c) कलचुरी | (d) शुग |

उत्तर: (a) गुप्त काल लगभग 320 ई. में शुरू हुआ, इससे ठीक पहले शासन करने वाले प्रमुख राजवंश प्रासंगिक हैं। विद्यशक्ति (लगभग 250-270 ई.) वाकाटक वंश के संस्थापक थे, जिसने मध्य और पश्चिमी भारत (आधुनिक महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश) के कुछ हिस्सों पर शासन किया था।

विकल्प (b), (c) और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ **चालुक्य:** चालुक्य वंश भारत में, विशेष रूप से दक्षन क्षेत्र (दक्षिणी और मध्य भारत) में, छठी से बारहवीं शताब्दी ईस्वी तक एक प्रमुख शासक वंश था। वे कला, वास्तुकला और प्रशासन में अपने योगदान और अपने तीन अलग-अलग, फिर भी संबंधित राजवंशों: बादामी चालुक्य, पूर्वी चालुक्य और पश्चिमी चालुक्य के लिए जाने जाते हैं।

- ❖ **कलचुरी:** कलचुरी राजवंश मध्य भारत का एक शक्तिशाली राजवंश था, जिसकी दो प्रमुख शाखाएँ थीं: महिष्मति के कलचुरी (6ठी-7वीं शताब्दी ईस्वी) और त्रिपुरी के कलचुरी (7वीं-13वीं शताब्दी ईस्वी)। त्रिपुरी के कलचुरी, जिन्हें चेदि के कलचुरी भी कहा जाता है, त्रिपुरी (जबलपुर के पास) से शासन करते थे।
- ❖ **शुग:** गुप्तों से बहुत पहले (185-73 ईसा पूर्व), मौर्य राजवंश के बाद पुष्पमित्र शुग द्वारा स्थापित राजवंश।

59. निम्नलिखित में से किसने समुद्रगुप्त की ‘प्रयाग प्रशस्ति’ की रचना की थी?

[INDA & NA (I) परीक्षा, 2023]

- | | |
|---------------|---------------|
| (a) हरिषेण | (b) चंद बरदाई |
| (c) विशाखदत्त | (d) कालिदास |

उत्तर: (a) प्रयाग प्रशस्ति, जिसे इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख के नाम से भी जाना जाता है, गुप्त सम्राज्य (लगभग 335-375 ई.) के महानतम शासकों में से एक, समुद्रगुप्त की प्रशंसा में रचित एक संस्कृत स्तुति (ब्राह्मी लिपि) है। इसके रचयिता हरिषेण थे, जो समुद्रगुप्त के दरबारी कवि, मंत्री और सेनापति थे।

शिलालेख में समुद्रगुप्त को कविराज (कवियों का राजा) कहा गया है और युद्धकला तथा संगीत व काव्य सहित कलाओं में उनकी बहुमुद्दी प्रतिभा का ब्याखान किया गया है। इसमें आर्यवर्त और दक्षिणापथ में उनके सैन्य अभियानों, सीमांत राजाओं और अटविराज्यों (वन्य राज्यों) के प्रति उनकी सम्मानजनक नीति और उनके सांस्कृतिक संरक्षण का विस्तृत विवरण दिया गया है। संगीत के प्रति उनके प्रेम की पुष्टि उन सिक्कों से होती है जिनमें उन्हें वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।

विकल्प (b), (c) और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ **चंद बरदाई:** 12वीं शताब्दी के कवि, पृथ्वीराज गुप्तों के लेखक, पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि, गुप्त युग से असंबंधित।
- ❖ **विशाखदत्त:** गुप्तकालीन नाटकाकार, जिन्होंने समुद्रगुप्त पर नहीं बल्कि चंद्रगुप्त मौर्य पर आधारित मुद्राराक्षस लिखा।
- ❖ **कालिदास:** गुप्त काल के प्रसिद्ध कवि (मेघदूत, अभिज्ञानशाकुन्तलम)।

60. निम्नलिखित में से किस नदी के तट पर प्राचीन माहिष्मती स्थित था?

[CDS (II) परीक्षा 2022]

- | | |
|------------|-------------|
| (a) सरयू | (b) सोन |
| (c) नर्मदा | (d) गोदावरी |

उत्तर: (c)

❖ प्राचीन शहर माहिष्मती वर्तमान मध्य प्रदेश में नर्मदा नदी के तट पर स्थित था।
❖ यह प्राचीन भारत का एक प्रमुख शहर था, जिसका उल्लेख महाभारत और रामायण जैसे संस्कृत महाकाव्यों और विभिन्न पौराणिक ग्रंथों में अक्सर मिलता है। पच पुराण के अनुसार, महिष्मती अवंती और अनूप क्षेत्रों में शक्ति और संस्कृति का केंद्र था।

❖ पौराणिक स्थिति वाले एक महान व्यक्ति कार्तवीर्य अर्जुन के शासन के तहत हैह्य राजवंश की राजधानी के रूप में कार्य करती थी।
❖ प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में यह एक महत्वपूर्ण शहरी केंद्र बना रहा, विशेष रूप से नर्मदा के किनारे अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण, जिसने मध्य भारत में व्यापार और राजनीतिक प्रभुत्व को सुविधाजनक बनाया।
❖ मध्य प्रदेश में स्थित महेश्वर जैसे पुरातात्त्विक स्थल के मंदिर शिलालेखों और भौगोलिक साक्षयों के आधार पर प्राचीन माहिष्मती के रूप में पहचान की जाती हैं।

विकल्प (a), (b) और (d) सही नहीं हैं:

- ❖ सरयू का संबंध प्राचीन शहर अयोध्या से था, महिष्मती से नहीं।
- ❖ गंगा की एक सहायक नदी सोन, मध्य प्रदेश, बिहार और उत्तर प्रदेश से होकर बहती है, जो पटना जैसे शहरों से जुड़ी है, माहिष्मती से नहीं।
- ❖ महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश से होकर बहने वाली गोदावरी नदी नासिक (एक धार्मिक केंद्र) और पैठण (एक सातवाहन राजधानी) से जुड़ी हुई है, न कि माहिष्मती से।

अन्य पुस्तके एवं कार्यक्रम



FREE MATERIAL

उडान
(प्रिलिम्स स्टैटिक रिवीजन)



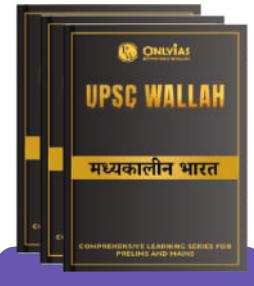
FREE MATERIAL

उडान 500 प्लस
(प्रिलिम्स समसामयिकी रिवीजन)



BOOKS

सामान्य अध्ययन +
CSAT PYQs



BOOKS

UPSC Wallah Books



COMING SOON

प्रिलिम्स वाला प्रश्नोत्तर संग्रह



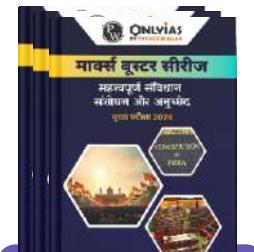
CURRENT AFFAIRS

मासिक समसामयिकी



CURRENT AFFAIRS

मासिक संपादकीय संकलन



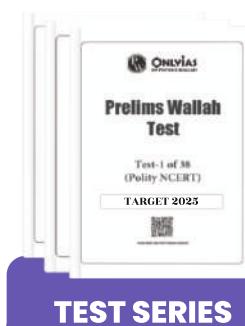
FREE MATERIAL

विविक रिवीजन बुकलेट



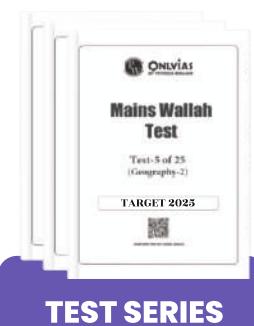
TEST SERIES

IDMP ईयर लॉन्च टेस्ट



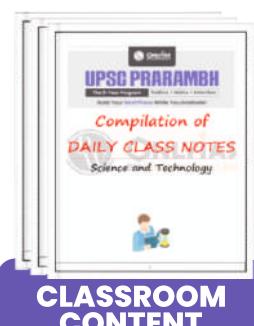
TEST SERIES

35+ प्रिलिम्स टेस्ट



TEST SERIES

25+ मेन्स टेस्ट



CLASSROOM CONTENT

डेली क्लास नोट्स और
अभ्यास प्रश्न

₹ 579/-

ISBN 978-93-7153-888-6



9 789371 538886
4c6848a5-270b-425e-
826b-2a01871ac1c0

All Content Available in **Hindi and English**

📍 Karol Bagh, Mukherjee Nagar, Lucknow, Patna